आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव

"लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा"

"Dedicated to Truth and Public Interest"

चेतना

अंक 33वां | सितंबर 2022

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

महात्मा गाँधी

डॉ राजेन्द्र प्रसाद

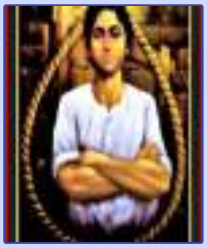

खुदीराम बोस

जुब्बा सहनी

राम प्रसाद बिस्मिल

विनायक दामोदर सावरकर

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

सरदार बल्लभ भाई पटेल

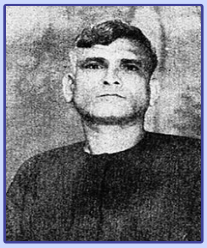

योगेन्द्र शुक्ल

राजकुमार शुक्ल

मंगल पाण्डेय

विपिन चन्द्र पॉल

श्री कृष्ण सिंह

अनुग्रह नारायण सिंह

बाबु कुँवर सिंह

स्वामी सहजानंद सरस्वती

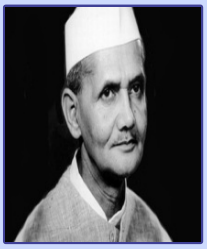

लालबहादुर शास्त्री

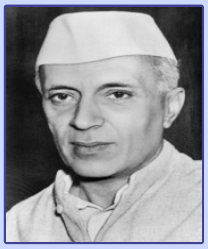

पंडित जवाहरलाल नेहरु

सुभाष चन्द्र बोस

चन्द्रशेखर आजाद

भगत सिंह

रानी लक्ष्मी बाई

लाला लाजपत राय

दादा भाई नौरोजी

तात्या टोपे

बाल गंगाधर तिलक

सुखदेव

विनायक दामोदर सावरकर

गोपाल कृष्ण गोखले

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

चम्पारण सत्याग्रह

स्वतंत्रता दिवस २०२२

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते प्रधान महालेखाकार महोदय

स्वतंत्रता दिवस एवं आजादी का अमृत महोत्सव मनाते कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

आज़ादी का
अमृत महोत्सव
भारत सरकार, गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
हिंदी दिवस समारोह – 2022 एवं
द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
હિન્દી દિવસ સમારોહ – 2022 અને
દ્વિતીય અખિલ ભારતીય રાજભાષા સંમેલન
पंडित दीनदयाल उपाध्याय इन्डोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात)
પંડિત દીનદયાળ ઉપાધ્યાય ઇન્ડોર સ્ટેડિયમ, સુરત (ગુજરાત
14 - 15 सितंबर / સપ્ટેમ્બર, 2022
ગુજરાતી
14 September 20

चेतना

अक्टूबर, 2021 से सितम्बर, 2022

वार्षिक हिंदी पत्रिका

33वाँ अंक

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना – 800001

चेतना के इस 33वें अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गए विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार	:	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
प्रकाशन	:	'चेतना'
प्रकाशक	:	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना –800001
अंक–33वाँ	:	(अक्टूबर, 2021 से सितम्बर, 2022)
मुख्य पृष्ठ	:	सात शहीद स्मारक, विधान सभा सचिवालय द्वार, पटना
मूल्य	:	राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

चेतना परिवार

बैठे हैं (बायीं से दाईं)

श्री मनमीत कुमार, उप महालेखाकार
श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार
श्री आदर्श अग्रवाल, उप महालेखाकार

खड़े हैं (बायीं से दाईं)

सुश्री रूपा कुमारी, वरिष्ठ अनुवादक - सह-सहायक संपादक
श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी -सह-प्रधान संपादक
श्री अभिजित कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी
श्री सिया राम पाण्डेय, सहायक पर्यवेक्षक
श्री अरूण कुमार, हिन्दी अधिकारी

पत्रिका संयोजक परिवार

संरक्षक एवं निदेशक

श्री प्रवीण कुमार सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति

श्री मनमीत कुमार

उप महालेखाकार

श्री आदर्श अग्रवाल

उप महालेखाकार

प्रधान संपादक

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सहायक संपादक

श्री अरूण कुमार

हिंदी अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री रूपा कुमारी

वरिष्ठ अनुवादक

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते गृह मंत्री अमित शाह

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका 'चेतना' के 33वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सृजनात्मक लेखन-प्रतिभा एवं उनके सामूहिक प्रयास के फलस्वरूप पत्रिका का प्रकाशन किया गया है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। कार्यालय में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना हम सभी की संवैधानिक जिम्मेदारी है। कार्यालयीन पत्रिका का राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों की लेखन प्रतिभा की अभिव्यक्ति का माध्यम है । इससे राजभाषा के प्रति प्रेरणा बढ़ती है। पत्रिका का वर्तमान अंक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया गया है। डिजिटल इण्डिया के क्षेत्र में यह एक सराहनीय कदम है।

पत्रिका का 33वाँ अंक हमारे सहृदय एवं सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे पढ़कर वे सृजनात्मक मेधा का भरपूर आनंद लेंगे। आपके महत्वपूर्ण विचार एवं मार्गदर्शन पत्रिका के आगामी अंक को और अधिक बेहतर बनाने में प्रेरक भूमिका निभाएगी ।

साथ हीं, मैं उन समस्त रचनाकारों, संपादक मंडल के सदस्यों एवं परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने अपने अथक प्रयास से पत्रिका को ज्ञानवर्धक एवं रूचिकर बनाया है। अंत में, मेरी यही मंगलकामना है कि इस कार्यालय में हिंदी की यह सृजन-चेतना सतत अपनी रश्मि विखेरती रहे। 'चेतना' पत्रिका हमेशा प्रगति पथ पर अग्रसर रहे एवं नए कीर्तिमान स्थापित करती रहे।

शुभकामनाओं सहित।

जय हिंद।

2.9.22

श्री प्रवीण कुमार सिंह
प्रधान महालेखाकार

सत्यमेव जयते

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 33वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, बहुत-बहुत हार्दिक बधाई । राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह एक सराहनीय कदम है । मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हृदय से धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके प्रयास एवं सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन हो पाया है । कार्यालय के कार्मिकों को अपना विचार व्यक्त करने के लिए पत्रिका एक उचित मंच है । कार्यालय में राजभाषा हिंदी में कार्य करना, राजभाषा नियमों, अधिनियमों का शत प्रतिशत अनुपालन किया जाना हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है । आशा है, सरकारी कामकाज में हिंदी को इससे प्रोत्साहन मिलेगा और हमलोग अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करके इसके विकास में अपना योगदान देंगे।

पत्रिका का वर्तमान अंक हमारे प्रिय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है । पाठकों के बहुमूल्य सुझाव हमारे लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगी । पत्रिका इसी तरह विकास के पथ पर अग्रसर रहे और राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग होता रहे, यही हमारी कामना है ।

शुभकामनाओं सहित ।

जय हिंद ।

श्री मनमीत कुमार
उप महालेखाकार

सत्यमेव जयते

संदेश

आजादी के 75वें सालगिरह पर यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका 'चेतना' के 33वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया जा रहा है । गृह पत्रिका द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं कार्यालय के लेखकों को अपनी लेखनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का उचित अवसर प्राप्त होता है । भारत के कोने-कोने में स्थित विभाग के अधीनस्थ कार्यालयों के बीच संपर्क स्थापित करने एवं कार्मिकों के बीच अपने महत्वपूर्ण सुझाव एवं विचार को आदान-प्रदान करने में गृह पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है । पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के विकास में एक सराहनीय कदम है । पत्रिका के प्रकाशन के लिए चेतना परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं सतत् प्रकाशन हेतु बहुत-बहुत शुभकामनाएँ ।

जय हिंद ।

आदर्श अग्रवाल
उपमहालेखाकार

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिन्दी दिवस समारोह 2022 सूरत (गुजरात)

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना की हिंदी गृह पत्रिका 'चेतना' का 33वां अंक हिंदी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । कार्यालय में राजभाषा हिंदी शत-प्रतिशत लागू करने में, राजभाषा के प्रचार-प्रसार में, कार्मिकों में राजभाषा के प्रति प्रेम एवं रूचि का संचार करने में गृह पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । पत्रिका के सफल प्रकाशन में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अधिकाधिक सहयोग मिला और आशा है आगे भी मिलता रहेगा । गृह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों के लिए एक सरल एवं सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा वे अपनी लेखनी प्रतिभा को समृद्ध करते हैं, विविध प्रकार की रचनाएँ लिखने का प्रयास करते हैं ।

भारत जैसे विविधताओं से पूर्ण देश में भाषा को भी विविधता है । विविध भाषा-भाषी वाले देश में हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में सहायक सिद्ध होती है । हिंदीतर भाषी क्षेत्र में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा एक कड़ी का काम करती है । हिंदी के चहुँमुखी विकास में हम सभी मिलकर सहयोग करते रहें । एक भारत-एक भाषा-श्रेष्ठ भारत का सपना साकार हो!

आजादी के अमृत काल में हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया गया है । पत्रिका की ई-प्रति हमारे कार्यालय की वेबसाईट पर भी उपलब्ध है । डिजिटल इण्डिया के क्षेत्र में यह एक सराहनीय कदम है।

आदरणीय पाठकों से सादर आगरह है कि पत्रिका के संबंध में अपना विचार एवं बहुमूल्य सुझाव अवश्य देना चाहेंगे। पत्रिका में कोई त्रुटि न हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है। यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए क्षमा याचना है। त्रुटि में सुधार के लिए हमारे प्रिय विद्वान पाठकगण अपना मार्गदर्शन करना चाहेंगे। इससे पत्रिका के आगामी अंक को और अधिक बेहतर बनाने में सहयोग मिलेगा।

अंत में, अपने हिंदी प्रेमी विद्वान, संरक्षक माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय श्री प्रवीण कुमार सिंह तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक मंडल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनके स्नेह एवं सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन हो पाया है।

शुभकामनाओं सहित ।

वीरेन्द्र कुमार सिंह
प्रधान संपादक

Office of the Director General of Audit (Home, Education and Skill Development)

Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

दिनांक 21.12.2021

23 DEC 2021

A.G.O.

PATNA

दूरभाष- 01123454288

31122160210

दिनांक-10.03.2021

A.G.O.

PATNA

Hindi cell

12021-20112

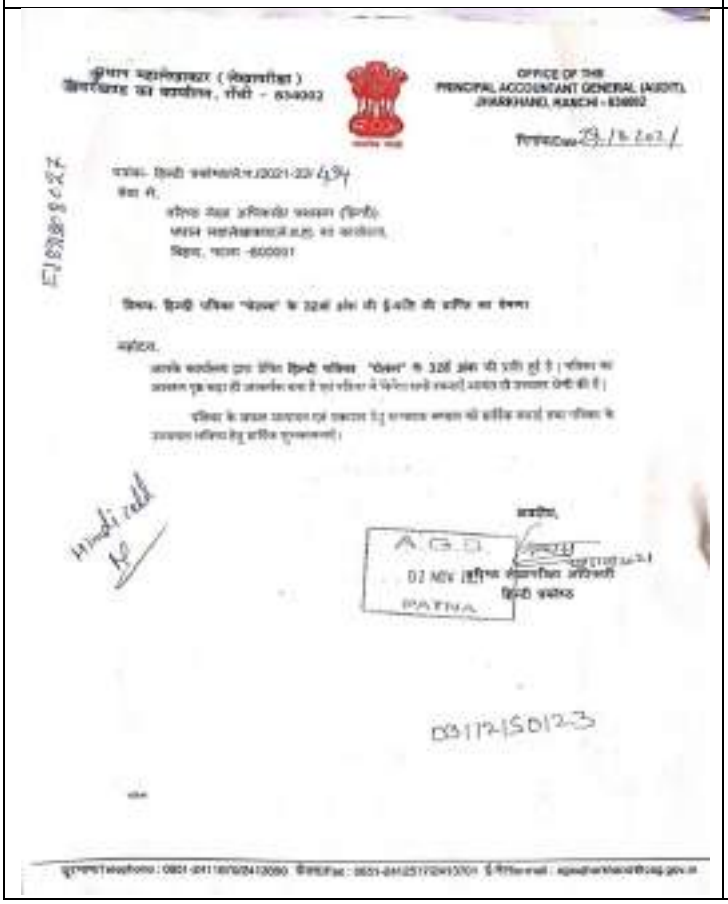

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), JHARKHAND, RANCHI - 834002

A.G.O.

PATNA

हिन्दी अधिकारी

Hindi cell

03112150123

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

A.G.O.

PATNA

Hindi cell

01122150710

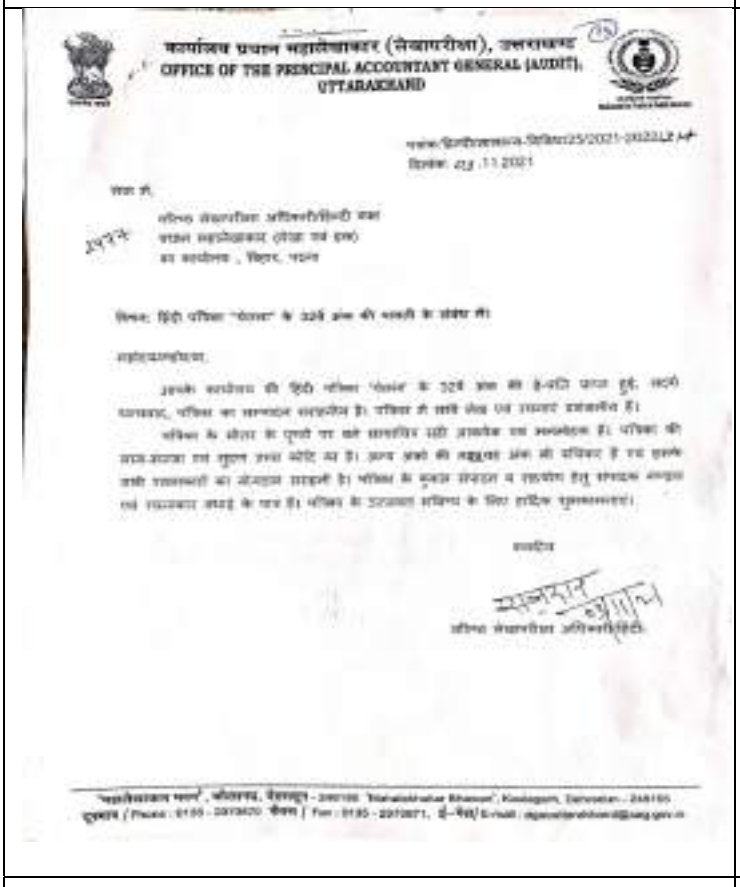

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केन्द्रीय), पटना

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त

(बिहार एवं झारखण्ड), पटना

प्रशस्ति पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केन्द्रीय), पटना के सदस्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पटना को 30.06.2021 एवं 30.09.2021 तिमाही में शत प्रतिशत पत्राचार हिन्दी में करने के लिए यह प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है और इस उत्कृष्ट कार्य की सराहना की जाती है।

दिनांक :

स्थान : पटना

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त (बिहार एवं झारखण्ड) सह
अध्यक्ष, न.रा.का.स. (के.), पटना

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना	रचनाकार के नाम	पदनाम	पृष्ठ सं.
	संदेश, प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) संदेश, उपमहालेखाकार संदेश, उपमहालेखाकार संपादकीय पाठकों के पत्र कार्यालय की प्रशस्ति पत्र			i iii v vii viii ix
1.	वास्तु वर्णनः संस्कृति का एक अध्याय	संजय कुमार ओझा	वरिष्ठ लेखाकार	1
2.	किराये का घर	श्रीराम पाण्डेय	सहायक लेखा अधिकारी	6
3.	रौल नंबर-37	अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	9
4.	पतन	बंशीधर मिश्रा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	13
5.	मेरी प्यारी माँ	चिराग नंदन,पौत्र-माधवी सिंहा	वरिष्ठ लेखाकार	15
6.	माँ की ममता	प्रिती कुमारी,द्वारा-धीरज कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	16
7.	धन की माया	प्रिती कुमारी,द्वारा-धीरज कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	17
8.	विदाई	प्रतिमा कुमारी	सहायक पर्यवेक्षक	18
9.	माँ	प्रतिमा कुमारी	सहायक पर्यवेक्षक	19
10.	वह बरसात	रूद्र प्रताप सिंह, पुत्र-शंकर लाल सिंह	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	20
11.	समय की यात्रा	रूद्र प्रताप सिंह, पुत्र-शंकर लाल सिंह	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	22
12.	एक बूँद	देव प्रताप सिंह, पुत्र-शंकर लाल सिंह	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	24
13.	गजल	राम सिंगार चौहाण	सहायक लेखा अधिकारी	26
14.	गजल	राम सिंगार चौहाण	सहायक लेखा अधिकारी	27
15.	मेरा देश	पल्लवी राज, पुत्र- सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	28
16.	कोरोना	पल्लवी राज, पुत्र- सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	29
17.	मजदूर के जूते	ऋषभ माँझी, पुत्र-सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	30
18.	मेहनत की खुशी	ऋषभ माँझी, पुत्र-सत्येन्द्र माँझी	लेखाकार	31
19.	गुहारः एक लड़की की	अर्चना	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	32
20.	चिट्ठीः माता-पिता की	अर्चना	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	35
21.	छुट गया जो बचपन	रंजीत कुमार	डी. ई. ओ.	36
22.	हाय! रे जियो	रंजीत कुमार	डी. ई. ओ.	37
23.	भविष्य की कल्पना	रंजीत कुमार	डी. ई. ओ.	38
24.	धन और धर्म	चन्द्र किशोर तिवारी	सहायक लेखा अधिकारी	39
25.	योग्यता की पहचान	धीरज कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	41
26.	मन की शांति अनमोल है	धीरज कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	42
27.	संघर्ष विराम हेतु अपील	श्रीमति आभा झा, द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर	सहायक लेखा अधिकारी	44

क्रम सं.	रचना	रचनाकार के नाम	पदनाम	पृष्ठ सं.
28.	हरी चुड़ियाँ	पुर्णेन्दु कुमार झा, द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर	सहायक लेखा अधिकारी	45
29.	हसास तुम्हारे होने का	पुर्णेन्दु कुमार झा, द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर	सहायक लेखा अधिकारी	46
30.	दर्द	कुमारी संगीता सिन्हा	सहायक पर्यवेक्षक	47
31.	राधा जी का प्रेम	विनय कुमार	पर्यवेक्षक	51
32.	लीरा	कुमारी संगीता सिन्हा	सहायक पर्यवेक्षक	52
33.	पड़ोसन	विनय कुमार	पर्यवेक्षक	55
34.	ओ अजनबी	सोनल स्वराज	लेखाकार	56
35.	नेमी कार्यालय टिप्पणियाँ			58

वास्तु वर्णन : संस्कृति का एक अध्याय

संजय कुमार ओझा,
वरिष्ठ लेखाकार

वास्तु शास्त्र आर्यों को विश्वकर्मा की देन है। वास्तु शास्त्र के सारे सिद्धांत ब्रह्मांड के ग्रहों व नक्षत्रों के चुंबकीय शक्तियों से उत्पन्न होने वाले प्रभाव पर आधारित हैं। वास्तु शास्त्र वह विज्ञान है जिसमें भवन निर्माण एवं उसके साजो-सामान को व्यवस्थित करने की कला का अध्ययन किया जाता है। विज्ञान के अंतर्गत एक जैसे किए गए सभी प्रयोगों के परिणाम व निष्कर्ष सदैव समान होते हैं पर कला में परिणाम सदा समान नहीं होते हैं। कला में कल्पना है और विज्ञान में तर्क। कल्पना शरीर है तो तर्क प्राण । सृजन/ निर्माण में कला एवं विज्ञान दोनों अंतर्निहित है । वास्तव में, वास्तु पद्धति कला एवं विज्ञान के अतिरिक्त हमारी संस्कृति की एक विचारधारा भी है।

निर्माण के लिए प्रकृति और परूष दो कारक है। प्रकृति जड़ तत्व है जबकि पुरूष चेतन तत्व। जड़ता में चेतना एक जैविक इकाई होती है। अत: गृह निकाय की कल्पना एक वास्तु पुरुष के रूप में की गई है जो कहे तो एक मानव निर्मित सजीव संरचना है। यह अपने वातावरण के प्रति संवेदनशील होता है। अत:, वास्तु पुरूष का कंफर्ट/ प्रोटेक्शन जोन में होना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से वास्तु पुरूष के सापेक्ष रंग, रूप सहित संसाधनों /उपकरणों की दिशा, स्थान एवं स्थिति यथोचित होना चाहिए। वास्तु एक तत्सम शब्द है जो वस धातु से लिया गया है जिसका अर्थ बसना या रहना है। ज्योतिष शास्त्र और पुराणों में विशेषता स्कंद पुराण, नारद पुराण एवं मत्स्य पुराण में वर्णित वास्तु संबंधी निर्देशक तत्वों का अनुसरण करने से वास्तु पुरूष की जैविक क्रियाओं का उद्दीपन होता है जिससे स्थानिक ऊर्जा सकारात्मक और अनुकूल हो जाती है।

चीन में वास्तु शास्त्र का नाम फेंगशुई है। फेंगशुई का अर्थ है हवा और पानी। फेंगशुई के अंतर्गत विभिन्न प्राकृतिक तत्वों का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुओं को उचित दिशा और स्थान पर रखने से ची यानी ऊर्जा का सकारात्मक प्रभाव सुनिश्चित किया जाता है। आवासीय परिप्रेक्ष्य में भू-चुंबकीय संरेखण एवं प्रकृति के पांच तत्वों का पारस्परिक संतुलन भारतीय एवं चीनी वास्तुशास्त्र के मौलिक सिद्धांत है। यह सिद्धांत सुखमय गृहस्थी के लिए है। सच कहे तो सुख संपन्नता में है और संपन्नता शांति में। शांति एक मानसिक अवस्था है जिसमें मानवीय इच्छाएं अपनी तृप्ति पा लेती है ।

भारत के सबसे बड़े उद्योगपति श्री मुकेश अंबानी का निवास एंटीलिया लगभग 15 हजार करोड रुपए की लागत से बना 27 मंजिला टावर है जो दक्षिणी मुंबई में लगभग 4 लाख वर्ग फुट में फैला हुआ है। एंटीलिया का वास्तु डिजाइन सूर्य एवं कमल की रूपरेखा पर आधारित है। सूर्य में वायु ,आकाश एवं अग्नि तत्व है जबकि कमल, जल एवं पृथ्वी तत्वों का प्रतीक है, यानी इस गगनचुंबी इमारत में पाँचों नैसर्गिक तत्वों का सम्यक समावेश है। इस घर के इंटीरियर डिजाइन के भव्यता के सामने सात सितारे होटल के आंतरिक अलंकरण भी फीके लगते हैं। वहीं, बाहरी

सज्जा में मैदान, पहाड़ी, झरने, तालाब, वनस्पति एवं विशेष तौर पर पुष्पीय पौधों से तैयार किया गया लैंडस्केप डिजाइन अद्‌भुत एवं सम्मोहक है । एंटीलिया में क्रोमा (रंग), अरोमा (गंध) एवं फोटो (प्रकाश) का संयुक्त प्रभाव मानव मन की तरंगों को आवर्धित करती है। इसका निर्माण पूर्ण हो जाने के बाद वास्तु दोष के कुछ कथित अड़चनों के कारण अंबानी परिवार ने तत्काल उसमें गृह प्रवेश की अपनी योजना को विराम दे दिया था। इससे स्पष्ट है कि अंबानी जैसे धनकुबेर भी भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों के प्रति आस्था रखते हैं।

कुछ स्थान अत्यंत मनोरम और आकर्षक लगते हैं जहां आदमी को सुखद अनुभूति होती है। यह अनुभव उस स्थान विशेष की स्थिति, संरचना, वातावरण एवं वहां मौजूद ऊर्जा के स्वरूप के कारण होता है। मंदिर एवं श्मशान ऐसे दो स्थान है जहां मौजूद ऊर्जा का स्वरूप विपरीत होता है। मंदिर का घंटानाद मन को सकारात्मक ऊर्जा से भरता है जबकि श्मशान का रूदन-क्रंदन मन को ऋणात्मक ऊर्जा से भरती है। स्थानीय ऊर्जा की आवृत्ति किसी व्यक्ति के उर्जा के सदृश्य स्वरूपों से परस्पर संवाद करके एकाकार हो जाती हैं और मानव मन स्थानिक ऊर्जा के अनुरूप संचालित होने लगता है। ऊर्जा के विभिन्न स्तरों के बीच हम अपने चारों तरफ जैव-अजैव घटकों से सामंजस्य स्थापित करते हैं। यह घटक बहुत ही विविधता लिए हो सकते हैं। इनके आपसी प्राकृतिक संबंधों का अध्ययन ही पारिस्थितिकी कहलता है। उल्लेखनीय है कि ऊर्जा का निर्माण व नाश नहीं होता बल्कि इसका स्वरूप मात्र ही बदलता है। उर्जा के इस गुण का उपयोग करके मनुष्य अपने निवास को अपने अनुकूलित कर सकता है अर्थात मनुष्य अपने पारिस्थितिकी का निर्माता भी है और उपज भी।

कुछ स्थानों की ऊर्जा दूषित होती है। वहां रहने वाले मनुष्य को धन की हानि, स्वास्थ्य की समस्या, रोजगार एवं कैरियर की समस्या, मानसिक क्लेश, मुकदमेबाजी, मांगलिक कार्यों में बाधा, अकारण कलह एवं सदैव गलत लोगों से जुड़ने की संभावना होती है । यहां रहने वाले व्यक्ति को बुरे सपने आते हैं। निर्णय क्रियान्वित नहीं हो पाते हैं। ज्ञानेंद्रियां अतिसंवेदी होकर अपनी क्षमता के परे नकारात्मक उर्जा की तरंगों को ग्रहण करने लगती है। विकास बाधित होता है और आत्मबल ह्रासित।

भवन निर्माण अपने बजट, स्थानीय नियम, आवश्यकता और सुविधा के अनुसार करें। निर्माण स्थल के मिट्टी व भवन निर्माण सामग्री को गुणवत्ता, कुशल कारीगरों की तैनाती एवं निर्दिष्ट मानकों को क्रियान्वित करते हुए भवन निर्माण करना आज के समय की मांग है। आजकल मकान बनाने के लिए किसी प्रकार की भूमि का उपलब्ध होना ही बहुत बड़ी बात है। सीमित साधनों में सामान्य लोगों द्वारा अपने लिए घर बनाने के लिए उपयुक्त स्थान का चयन करना, चयनित स्थान पर गृह निर्माण की योजना बनाना एवं निर्मित गृह के सज्जा का संधारण करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसमें यदि वास्तु दोष उत्पन्न हो जाए तो उसका निवारण शास्त्र सम्मत उपाय से किया जा सकता है।

गृह निर्माण के लिए तिराहे या चौराहे जैसे अधिक भीड़भाड़ वाले स्थान या कोई निर्जन स्थान या बहुत शोर करने वाले फैक्ट्री के निकट स्थान या हानिकारक रासायनिक उत्सर्जन व रेडियो विकिरण करने वाले संयत्रों के निकटवर्ती स्थान, कसाई खाना/टेनरी के निकट स्थान, अधिक प्रभावशाली/दबंग लोगों के निवास के समीपवर्ती स्थान, अवैध गतिविधियों वाले स्थान के इर्द - गिर्द वाले स्थान, जहां स्वधर्मी या स्वजाति ना रहते हो या जहां समीप में कोई मंदिर नहीं हो या जो स्थान गर्त में हो या नदी, वृक्ष जैसे प्राकृतिक संसाधनों से रहित हो वैसे स्थान निवास के अनुकूल नहीं होते हैं।

जब किसी भूखंड के उत्तर और पश्चिम की ओर दो सड़कें होती हैं तो वह एक ए ग्रेड प्रॉपर्टीज होती है। जब घर के तीन तरफ सड़कें हो तो इसे आवासीय/वाणिज्यिक उद्देश्य के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। एल-शेप्ड एवं टी-जंक्शन जैसे डेड एन्ड प्लॉट पर भवन निर्माण से बचें। भवन निर्माण स्थल के मिट्टी का रंग- रूप, गंध एवं उसकी जल संधारण क्षमता भी महत्वपूर्ण होती है। ऐसी भूमि जिसमें बहुत सारे बिल/बांबी हो या जिसमें हड्डियां, कोयला, राख, भूसा, रक्तरंजित वस्त्र या जिसमें गंदी वस्तुएं दफन हो या जिस भूखंड के बीच में गड्ढा हो या जो भू-खंड दक्षिण व पश्चिम में नीचा हो या आगे से पीछे की ओर सकरा हो यो चौकोर नहीं हो या जो परित्यक्त हो, वह भूमि निवास के योग्य नहीं होती है। विशेषत:, जिस जमीन में मनुष्य या जानवरों की अस्थियां दफन होती है उसमें शल्य दोष होता है।

घर का निर्माण पौष, चौत्र, ज्येष्ठ, भाद्रपद एवं आश्विन मास में आमतौर पर नहीं करना चाहिए। गृहारंभ महीने के शुक्ल पक्ष में किया जाना चाहिए। साथ ही, रविवार एवं मंगलवार के दिन गृहारंभ से बचें। जमीन गुरुवार व शुक्रवार को खरीदना अच्छा होता है। घर पुराने मलवे से नहीं बनाया जाना चाहिए। घर के दक्षिण में खुला स्थान नहीं छोड़ना चाहिए। घर में कटा हुआ कोना नहीं होना चाहिए। घर के ऊपर किसी मंदिर या विशाल वृक्ष की छाया नहीं पड़नी चाहिए, इससे छाया वेध होता है। इससे घर पर छाया ग्रह राहु का दुष्प्रभाव सक्रिय हो जाता है।

ईशान (पूर्व -उत्तर) कोण में पानी व पूजा का स्थान, आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) कोण में रसोईघर, नैऋत्य (दक्षिण -पश्चिम) कोण में शौचालय/बाथरूम और वायव्य (उत्तर पश्चिम) कोण में भोजन, अतिथि गृह, विवाह योग्य कन्याओं का कमरा, घर के मुखिया का शयनकक्ष, गैराज, गोशाला एवं बिना टॉयलेट के बाथरूम होना अच्छा होता है। घर का मध्य स्थान ब्रह्म स्थान कहलाता है जो खाली होना चाहिए। उत्तर दिशा में अध्ययन कक्ष एवं तिजोरी इत्यादि हो। घर का दक्षिण एवं पश्चिम भाग ऊँचा हो। पानी का बहाव पूर्व या उत्तर की ओर हो। घर के दक्षिण दिशा में शयनकक्ष एवं भंडार गृह हो।

नैऋत्य कोण में भूमिगत टंकी नहीं होना चाहिए। नैऋत्य कोण को भारी और ऊंचा रहना चाहिए। सीढ़ी घर दक्षिण या पश्चिम में इस तरह होना चाहिए कि सीढ़ी चढ़ते समय मुंह दक्षिण या पश्चिम दिशा में हो। सीढ़ी का मुड़ाव घड़ी के सुई के घूमने की दिशा में होना चाहिए। सीढ़ी और मुख्य दरवाजा आमने-सामने नहीं हो। छत पर फालतू सामान जैसे टूटे फर्नीचर वगैरह नहीं रखी जाती हों। घर में तीन दरवाजे एक सीध में नहीं होना चाहिए। घर के दक्षिण दिशा में दरवाजें एवं खिड़कियाँ नहीं बनवानी चाहिए। सोफा एवं अन्य फर्नीचर दक्षिण या पश्चिम दिशा में रखें ।

मुख्य द्वार आकार में अन्य द्वारों से बड़ा होना चाहिए। मुख्य द्वार पर सिंदूर से बनी स्वस्तिक की आकृति अंकित हो। घर के दरवाजे खुलते या बंद होते समय चरमराहट की आवाज नहीं करते हो। उत्तर या पश्चिम मुखी द्वार वाले भवन में घोड़े के नाल का मुंह ऊपर करके मुख्य द्वार पर ठोकें। दक्षिण मुखी द्वार पर विशेषत: पंचमुखी हनुमानजी का चित्र अंकित होना चाहिए। मुख्य द्वार के सामने कोई खंभा, कुँआ, पेड़, गड्ढा या गंदगी नहीं होना चाहिए। गणेशजी का फोटो मुख्य द्वार पर अंदर की ओर से लगाना चाहिए। मुख्य द्वार अंदर की ओर खुले। आगे कोई खंडहर हो तो घर के सामने एक दर्पण लगा दे जो नेगेटिव रेडिएशन को उल्टी दिशा में परावर्तित कर सके।

रसोईघर यदि आग्नेय कोण में नहीं हो तो इसमें यज्ञ करते ऋषियों का फोटो लगाना चाहिए। रसोई घर में हरे फलों एवं सब्जियों का फोटो लगाना चाहिए। रसोईघर के नल में लीकेज नहीं हो। रसोई घर में नमक युक्त जल से पोछा लगाएं। रसोई घर में झारू तथा डस्टबिन नहीं हो। रसोईघर में रात को जूठे बर्तन नहीं रखें। कॉकरोच और छिपकली को

रसोई घर से दूर रखें। रसोई घर में चूल्हा और पानी का संगरोध हो। मकान में डायनिंग हॉल पूरब या पश्चिम दिशा में हो। रसोई में बनाया गया भोजन का अंतिम नाममात्र कुछ अंश छोड़ देना चाहिए।

घर में पूजा घर पूर्व - उत्तर कोण में हो। पूजा का मंडप पिरामिड के आकार का हो। मंडप में मूर्तियों की ऊंचाई अधिकतम 12 अंगुल तक का हो। घर में शिवलिंग हो तो पारद का हो। पूजा स्थल पर संभव हो तो एक दक्षिणावर्ती शंख रखें और पूजा के बाद इसे बजाय भी। पूजा मंडप में खंडित मूर्तियां नहीं रखें। मूर्तियों की आंखें ऊपर या नीचे देखने वाली नहीं हो। देवी-देवताओं के फोटो के साथ पितरों का फोटो नहीं लगाना चाहिए। मंडप में माचिस व बासी चीजें नहीं रखना चाहिए। गायत्री मंत्र व प्रणवाक्षर ओम की ध्वनि का स्नानादि से शुद्ध होकर उच्चारण करें या ध्यानपूर्वक नियमित रूप से सुने। घर में हवन की बहुत महिमा है। घर में चतुर्दिक गंगाजल व शंख का पानी छीटें।

शयनकक्ष में बीचो-बीच बीम नहीं होना चाहिए। बेडरूम में आईना नहीं होना चाहिए। वास्तु ऊर्जा का विन्यास बहुत हद तक घर में लगे दर्पण पर निर्भर करता है। चेहरे को विकृत रूप से दिखाने वाले दर्पण को तुरंत बदल दे। टूटे हुए, दाग-धब्बे वाले, बहुत छोटे, धार-युक्त व नुकीले दर्पण को उपयोग में नहीं लाएं। बड़े आकार के समतल दर्पण लगाने से घर का आयाम वृहत्तर होने का सुखद आभास होता है। शयन कक्ष में फव्वारे या झरने वाले पेंटिंग नहीं होने चाहिए। शयनकक्ष पूर्वोत्तर कोण में नहीं होना चाहिए। पलंग दक्षिण या पश्चिम दीवार से सटा होना चाहिए। शयन कक्ष में देवी-देवताओं या पितरों की मूर्तियां/फोटो नहीं हो। शयन कक्ष में सूरज का प्रकाश एवं प्राकृतिक हवा का आगम बना रहे। मानसिक रुग्णता एवं अवसाद ग्रस्त लोग सोते समय सफेद आक (मदार) के रुई से बना तकिया उपयोग करें।

घर में युद्ध व उन्मादक दृश्यों वाली पेंटिंग नहीं लगाना चाहिए। सात सफेद घोड़े, भरत-मिलाप, कुलांचे भरते मृग-समूह, उगते सूरज, राम दरबार, उड़ते हनुमानजी व गोपी-कृष्ण के रसमय रास की झाँकी का पेंटिंग लगाना अच्छा होता है। घर में देवी-देवताओं का पोट्रेट/ पेंटिंग सौम्य स्वरूपों वाली हो। समुद्र, झरने वाली पेंटिंग उत्तरी दीवार पर तथा आग /लपटों वाली पेंटिंग दक्षिण दिशा वाले दीवार पर लगाए। उत्तरी दीवार पर हरियाली को प्रदर्शित करने वाले पेंटिंग लगाएं। चांदी का हाथी-घोड़ा, छत्र- सिंहासन, कछुआ, श्रीयंत्र इत्यादि घर में रखें। मोर पंख, ध्यान मुद्रा में भगवान बुद्ध की प्रतिमा, विंड चाइम व एक्वैरियम रखना भी अच्छा है। अपने देवों, ऋषियों एवं पितरों के प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए। अतः दक्षिणी दीवार पर अपने पितरों का फोटो लगाएं। देवी देवताओं की बड़ी मूर्तियां प्राण प्रतिष्ठित होनी चाहिए इसलिए यह मंदिरों में ही अच्छी होती है, घरों में नहीं। दक्षिण दिशा वाले दीवार पर दीवार घड़ी एवं आईना नहीं लगा हो। दीवारों पर धीमें चलने या बंद पड़ी घड़ियाँ नहीं लगी रहने दे। शौचालय में फिटकिरी का एक अनावृत पिंड रखें।

भवन निर्माण करते समय पेड़-पौधों की कटाई के कारण पर्यावरण को हुई क्षति की पूर्ति के लिए वहां पुनः पौधारोपण करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। त्रिविध तापों को हरने वाली तुलसी का पौधा घर में जरूर लगाएं। इसके अतिरिक्त परिसर में शिवप्रिय बेल, विष्णु प्रिया वैजंती, हरश्रृंगार (परिजात) व केला, दुर्गाप्रिया अपराजिता (शंखपुष्पी) व गुड़हल और अन्य पेड़ पौधों में आंवला, नीम, अशोक, चंपा, मोगरा सदाबहार, रजनीगंधा एवं अन्य खुशबूदार फूलों वाले पौधे वास्तु ऊर्जा को बढ़ाते हैं। परिसर में उगने वाले सफेद आक एवं काले धतूरे आघात अवशोषक के रूप में काम करते हैं। शुक्र ग्रह एवं लक्ष्मी का प्रतीक मनी प्लांट साउथ ईस्ट जोन में लगाएं। मनी प्लांट की लताएं उर्ध्वमुखी हो और भूमि का स्पर्श न करती हो। घर में कैक्टस प्रजाति के कांटेदार पौधे लगाना अच्छा नहीं होता है। घर में बोनसाई

का होना भी उचित नहीं होता है। घर पर पीपल नहीं उगने दे। दुध (लैटेक्स) पैदा करने वाले पौधे भी घर में नहीं लगाने चाहिए । यथोचित देखभाल के बाद भी यदि घर के हरे- भरे पौधे सूखने लगे तो गृहस्थ को अपने आचार -विचार की समीक्षा करनी चाहिए।

घर में तोता, मोर, हंस पालना अच्छा माना जाता है। घर में काले रंग की चीटियों को कुछ मीठा जरूर खिलाते रहे। गाय, स्ट्रीट डॉग एवं कौवे को रोजाना जरूर कुछ खिलाएं विशेष कर पितृपक्ष में। छत पर पक्षियों के लिए दाना-पानी रखें। घर में यदि गौरैया घोंसला बनाए तो बहुत अच्छा समझे। घर में उल्लू, चमगादड़, टिटिहरी आदि का वास होना नेगेटिविटी का संकेत है। घर पर नीलकंठ का बैठना बेहद शुभ एवं गिद्ध का बैठना बेहद अशुभ माना जाता है। घर में ततैया/मधुमक्खियों का छत्ता एवं मकड़ी का जाल नहीं रहने दे।

उक्त मान्यताओं का वर्णन अतीत की धरोहर हमारे गौरवशाली सनातन संस्कृति के एक अध्याय के रूप में किया गया है। संस्कृति का निर्माण संस्कारों से होता है। हमारे संस्कार हमारे पूर्वजों की देन है। अपने अनुभव और तर्क की कसौटी पर परखने के बाद ही हमारे पूर्वज किसी भी विचार को मान्यता प्रदान करते थे। ये मान्यताएं महज अंधविश्वास नहीं हो सकती है। तथापि परिवर्तन संसार का नियम है। नए युग के निर्माण के लिए हमें परिवर्तन का सहर्ष स्वागत करना चाहिए। जो मान्यताएं आज व्यवहारिक या प्रासंगिक नहीं है उनके प्रवृत रहने का औचित्य नहीं है।

"ऊँ द्यौ शान्ति पृथ्वी शान्ति आप: शान्ति वनस्तपतै शान्ति अन्तरीक्ष शान्ति भवतु सर्वेषु शान्ति ऊँ''

किराये का घर

श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

दो मित्र, मनोहर बाबू, भव्य बाबू। धन-धान्य सम्पन्न मनोहर बाबू नाम के अनुरूप तबीयत के भी धनी थे। जिससे मिलते, अपना बना लेते। अर्थात् यह कहना नहीं होगा कि उनके कई मित्र थे। परंतु जब सबसे अभिन्न मित्र की बात होती तो भव्य बाबू का नाम एकमत से गाँव के लोग लेते।

यद्यपि मनोहर बाबू की तरह संपन्न नहीं थे भव्य बाबू। बस यूँ कहें कि थोड़ी-सी जमीन की खेती के सहारे किसी प्रकार दाल-रोटी चल जाती थी। पर हाँ, थे बहुत स्वाभिमानी। अपनी विपन्नता का राग कभी भी अपने अभिन्न मित्र के आगे नहीं अलापते। मनोहर बाबू चाहकर भी उनकी गरीबी को दूर नहीं कर सकते थे। वे जानते थे कि यदि इस ससु... के नाती को कुछ मदद करने की कह भी दूँ तो मुझसे दोस्ती तक तोड़ लेगा। हालांकि इस बात के लिये अपने उस निर्दोष-निर्लोभी मित्र पर उन्हें बहुत गर्व था।

सच में अभिन्न मित्रता थी दोनों में। जिस दिन भव्य बाबू मिलने नहीं आते, चिड़चिड़े से हो जाते थे मनोहर बाबू-अरे, कल कहाँ मर गया था रे स्सा... भव्या।

भव्य बाबू भी चिढ़ते हुए हठात बोल पड़ते- स्सा... मेरा नाम तक ठीक से लेना नहीं आता। ऐसा मूर्ख-अज्ञानी दोस्त से तो भगवान बचायें।

-अरे, क्या गलत कहा मैंने?

-मेरा नाम भव्या है कि भव्य, बोल तो जरा। भव्या तो लड़की का नाम होता है।

-तू तो नखड़ा भी तो लड़कियों की तरह ही दिखाता है, जिस दिन मन हुआ, आयेंगे, नहीं तो नहीं।

फिर तू-तू मैं-मैं होना शुरू हो जाता। तकरार इतनी बढ़ जाती कि कोई नया आगंतुक सुन-देख ले तो बीच-बचाव की बात सोचने लगे। परंतु गाँव का कोई भी व्यक्ति ऐसा न सोचता,

न करता- अरे भाई, मदारी वाला ड्रामा करते हैं ये दोनों। आजतक न जाने कितनी बार ऐसा हुआ, पर इनकी यारी में फर्क आया कभी?

कुछ लोग तो अतिशय चिढ़ जाते- हमलोगों को मूर्ख बनाने के लिए ऐसा करते हैं ये। खाया-पिया कुछ नहीं, गिलास तोड़ा बारह आना।

खैर, इस तकरार, यानि ठेठ गंवई भाषा में कहें तो बतकुचन के सहारे दोनों मित्रों का जीवन बहुत मजे से कटता जाता।

मनोहर बाबू के परिवार में पत्नी के अलावा दो पुत्र थे। अपनी जमींदारी थी। सुख-सुविधा, नौकर-चाकर की कोई कमी नहीं। परंतु कमी थी, तो यह कि श्रीमतीजी (पत्नी) और दोनों पुत्र मनोहर बाबू जैसे उदार न थे। भव्य बाबू से उनकी मित्रता उन्हें जरा भी नहीं सुहाती। पत्नीजी तो अक्सर कुढ़कर बड़बड़ाती रहती- राजा भोज के साथ गंगू तेली का यह मेल न जाने कब तक चलता रहेगा। जब देखो, तब दोनों बैठक में जम कर हो-हल्ला करते रहते हैं।

यह सब जानते हुए भी मनोहर बाबू के विचार में न कोई अंतर आना था, न आया। कहते भी कुछ नहीं थे,परंतु इस बात का उन्हें तकलीफ तो होती ही थी- मैं अपने उस दोस्त के बिना जीवित नहीं रह सकता। यह जानते हुए भी आखिर ये लोग मेरे मनोभाव को समझ क्यों नहीं पाते हैं?

इधर कई दिनों से भव्य बाबू उनके यहाँ नहीं आ रहे थे। कुछ दिनों तक तो मनोहर बाबू अपने मित्र से चिढ़े रहे। परंतु जब मन नहीं माना तो एक सेवक को पता करने के लिये भेजे। भव्य बाबू को हृदयाघात हुआ था और जीवन-मृत्यु के बीच कई दिनों से अस्पताल में पड़े हुए थे।

अस्पताल पहुँच जब मित्र की मरणासन्न स्थिति को देखा तो लगभग रोते हुए मनोहर बाबू क्रोध में बोलने लगे - अरे नालायक, इतना कुछ होने पर भी तू मुझे खबर नहीं करवाया। अब किस दिन के लिये या दोस्ती रहेगी? और भव्य बाबू के मना करने पर भी हर प्रकार से उनकी सेवा, सहायता में लग गऐ। अस्पताल, डॉक्टर और दवा में जो भी खर्च होता, स्वयं करने लगे। किसी को बोलने तक का मौका नहीं देते। भव्य बाबू अपने इस मूढ़ मित्र की मित्रता के आगे नतमस्तक थे। मूढ़ मित्र इसलिये कि, वे अब बचने वाले नहीं हैं। डॉक्टर जवाब दे चुके थे और यह मनोहर बाबू को भी पता था। परंतु उस हठी, अज्ञानी, कमजोर दिल वाले को कौन समझा सकता था। हाँ, टूटती हुई आवाज में एक बार समझाने की असफल कोशिश की भव्य बाबू ने- इतना अधीर क्यों हो रहे हो मनोहर? यह शरीर तो किराये का घर है, एक-न-एक दिन तो सबको जाना ही होगा। परंतु, मित्र की द्रवित स्थिति को देख वे उससे ज्यादा न बोल सके।

मनोहर बाबू बिना कुछ कहे, अपने उस मित्र के देखभाल में लगे रहे। उन्हें लगता कि डॉक्टर भगवान थोड़े न होते हैं। क्या पता,कोई चमत्कार हो और उनका वह मित्र फिर से उनके साथ हंसने-बतियाने लगे।

परंतु कोई चमत्कार नहीं,जो तय था, अवश्यंभावी था, वही हुआ। मनोहर बाबू के सामने ही मित्र की इहलीला समाप्त हो गई।

भव्य बाबू के जाने के बाद टूट-से गये मनोहर बाबू। और घर में सांत्वना देने वाला भी तो कोई नहीं था। उलटे पत्नी बराबर यह एहसास कराती रहती कि पैसा पानी की तरह बहाने की क्या जरूरत थी। डॉक्टर तो पहले ही जवाब दे चुके थे। दोनों बेटे भी माँ के सुर में सुर मिलाते।

हाँ, मनोहर बाबू का एक सेवक, रामदीन उनकी इस व्यथित स्थिति को भली-भांति समझता था। परंतु कर क्या सकता था बेचारा। कभी-कभी आकाश की ओर ताकते हुए बड़बड़ाता और सर्व शक्तिमान उस सत्ताधीश से सवाल करता- हे भगवान, इतने अच्छे इंसान को ऐसा परिवार क्यों मिला?

पूरी तन्मयता से बेचारा उस निरपराध मालिक की सेवा में लगा रहता। उनकी हर बात, हर आदत का पूरा खयाल रखता। भरसक प्रयत्न करता कि उन्हें कोई तकलीफ न पहुंचे। परंतु शारीरिक तकलीफ हो तो,बहुत हद तक दूर किया जा सकता है, मानसिक तकलीफ कौन दूर कर सकता है भला?

मनोहर बाबू के सीने में एक दिन अत्यंत तीव्र दर्द हुआ। ऊपर वाले का खेल समझ गये वे। रामदीन को बहाने से उसके घर भेज दिये। पत्नी को कहलवा भेजा कि आज मुझे मुझे भूख नहीं है, खाना देने कोई नहीं आए। दरवाजा बंद कर अत्यंत पीड़ा में भी परम मित्र, जो अब सच में परम हो चुके थे,को याद करने लगे। मृत्यु जब सन्निकट होती है, कमजोर मानसपटल भी अति तीक्ष्ण एवं तीव्र हो जाता है। अचानक उन्हें याद आया कि भव्या कहने पर कितना चिढ़ता था ससु...। मृत्यु शय्या पर भी ठठाकर हँसने लगे।

अगले दिन मनोहर बाबू की मंजिल जा रही थी। न जाने कैसे रामदीन उसमें शामिल हो गया और हँसते हुए एक बात ही रटता जा रहा था- यह शरीर एक किराये का घर है, मेरे मालिक को उस घर से मुक्ति मिल गई।यह शरीर एक किराये का...

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है ।

महात्मा गाँधी

रोल नंबर-37

अमरेंद्र कुमार पांडेय
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अंग्रेजों के जमाने में रिस्ट्रिक्टेड ब्लॉक नाम से जाने जाने वाला इलाका, जिसमें आम जनों का प्रवेश वर्जित था, आज का R ब्लॉक है। 80 के दशक में हम लोगों का कार्यालय थोड़ी बहुत विरोध के बाद, बिस्कोमान से इस इलाके में स्थित वर्तमान भवन में स्थानांतरित हो गया। थोड़े दिन पहले तक इस इलाके से एक रेलवे ट्रैक गुजरती थी, जो हड़ताली मोड़, पुनाइचक होते हुए दीघा जाती थी। इस ट्रैक का निर्माण सन 1862 में हुई थी। इस ट्रैक से गुजरने वाली ट्रेनों में यात्रियों की संख्या पिछले कुछ दिनों से 3 से 10 तक ही हुआ करती थी, और रेलवे पर यह एक बोझ बन गया था, ट्रेनों के गुजरते समय R-Block क्रॉसिंग एवं हड़ताली मोड़ पर होने वाली अफरा-तफरी और परेशानी वो भी कार्यालय आने के समय में, का गवाह एवं भुक्तभोगी हम में से कई है। ट्रैक के दोनों ओर के अतिक्रमण एवं असामाजिक तत्वों का जमावड़ा अब इतिहास बन चुका है। इस जगह अब आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक सड़क "अटल पथ" का निर्माण हो चुका है। अटल पथ का उद्गम अथवा शुरुआत इस आर ब्लॉक से हुआ है जिससे इस इलाके के महत्त्व में एक नया अध्याय जुड़ गया है। उद्गम-विसर्जन, आदि-अंत, जन्म-मृत्यु, निर्माण-नाश ऐसी दो तहें हैं जिनके मध्य इनके बीच की घटनाएं सहेजे रहती है। यह दो तहें अति महत्वपूर्ण है। भौतिकता, आध्यात्मिकता समस्त इसमें समाहित है उद्गम ,आदि ,निर्माण, जीवन में हर्ष लाता है, वही नाश, विसर्जन ,अंत, मृत्यु विषाद लाता है।

बचपन की जिज्ञासा कि किसी नदी नदी का जब उद्गम होता है तो उसमें पानी कहां से आता है और जब किसी सड़क का उद्गम होता है तो उसमें ट्रैफिक कहां से आता है। उद्गम स्थलों का दृश्य कैसा होता है, का समाधान अटल पथ के उद्गम स्थलों से हो गया। इसके निर्माण काल से ही मैं इसे देखता आया और यह स्थल दिलो-दिमाग में रोमांच पैदा करता है, आखिर है उद्गम स्थल। नदियों का उद्गम तो हमारे शास्त्रों में तीर्थ स्थल के रूप में वर्णित है।

एक दिन की बात है अटल पथ पर इसी उद्गम स्थल पर एक बाइक सवार और साइकिल सवार के बीच टक्कर हो गई जिसमें साइकिल सवार गिर गया एवं बाइक सवार असंतुलित हो गया। क्योंकि मैं पास में ही था , उठाने के उद्देश्य से उनकी ओर लपका। मेरे पहुंचने के पूर्व हीं वे दोनों संतुलित हो गए और दोनों के बीच बहस शुरू हो गई ।

बाइक वाले ने कहा मैं इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी आईटी का छात्र हूं। कोई व्यक्ति अप्रिय घटना नहीं चाहता है, जानबूझकर मैं ऐसा टक्कर क्यों मारूंगा? दरअसल आईटी में इस बात का भी अध्ययन किया जाता है कि अच्छाई के प्रयास में त्रुटि होता है और इसी के प्रभाव से अप्रिय घटना घटती है। आगे उन्होंने कहा, मानव मन/शरीर ब्रह्मांड का सर्वश्रेष्ठ सॉफ्टवेयर है, इसी के साथ बुराई भी है ,और यहीं इसे सर्वोत्तम बनाता है। अनुराग, दया, प्रेम के साथ-साथ इसमें विद्वेष, जलन आदि भी है। अतएव हमें इन अप्रिय घटनाओं के लिए तैयार रहना चाहिए। साइकिल सवार ने कहा मैं जुगाड़ टेक्नोलॉजी (पेटी)से संबंधित हूं, और जहां आईटी की सीमा समाप्त होती है वहीं से जीटी की शुरुआत होती है। क्या बकवास पढ़ते हो, अप्रिय घटनाएं होगी ही। ऐसा क्यों नहीं पढ़ते कि अप्रिय घटनाएं हो ही नहीं। सब कुछ मंगल हो। मंगल हो कुछ देर पश्चात दोनों के बहस में तल्खी बढ़ती गई और विचारों का ही सही बहस तीखी एवं ऊंची

आवाज में होती गई। मैं पास ही जॉगिंग करता पूरी तन्मयता से उनकी बातें सुन रहा था। उनकी बातों से मेरी दिलचस्पी और उत्सुकता बढ़ी, जब उनकी बहस तीखी हो गई तो मैंने उन दोनों के सामने जाकर बोला आप दोनों के विचार उत्तम है और दृष्टिकोण सही हैं। हम सब सौभाग्यशाली हैं क्योंकि इन समस्याओं का समाधान हमारे धर्म शास्त्रों में है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन

मां कर्मफलहेतुभुर्माते संगो स्त्वकर्मनी

हमें कर्म करने का ही अधिकार है परिणाम हमारे हाथ में नहीं। लेकिन यदि हमारे कर्म 100% खादी सही हो तो परिणाम प्रिय होगा ही। कर्म के सुधार के साथ ही जे.टी. महोदय की परिकल्पना की अप्रिय घटनाओं से रहित समाज सफली भूत होगा। आवश्यकता है कर्म को सही करने का। मनुष्य के कष्टों का 99% स्वयं मनुष्य ही जिम्मेदार है। गीता की इस ज्ञान से आप दोनों का सोच आच्छादित है हम सभी अप्रिय घटना नहीं चाहते किंतु इसके लिए उपयुक्त कर्म नहीं करते।

जरा सोचिए उस समाज की जहां अप्रिय कुछ हो ही ना तो यह पृथ्वी स्वर्ग कहलाएगा ना। हम अपनी संतति एवं अपने लिए संपत्ति अर्जन करते हैं ताकि कष्ट ना हो परंतु भौतिकता का कोई अंत नहीं। कितनी भी दौलत संग्रह कर ले, सुख की गारंटी नहीं है। जरा कल्पना करें अप्रिय घटना रहित समाज का उसमें हमारी आने वाली पीढियां कितने मौज मस्ती में रहेगी। इसके लिए हमें, आपको, सबको मात्र अच्छे कर्म ही तो करने हैं। आज से, अभी से हम सभी इस पुनीत कर्म में लग जाएं। उन दिनों ने मेरे विचारों से पूर्ण सहमति जताई और इस घटना का पटाक्षेप हो गया।

आईटी स्टूडेंट की यह बात कि मानव मन शरीर ब्रह्मांड का सर्वश्रेष्ठ सॉफ्टवेयर है और इसमें सन्निहित बुराइयां इसे सर्वोत्तम बनाती है, मन मस्तिष्क पर बैठ गया। नकारात्मक विचारों को भी यह हवा देने लगा। कोरोना काल की भयावहता में भी वैसे लोगों से मेरे मन में जलन और ईर्ष्या होने लगी जिन्होंने स्वास्थ्य लाभ पर उचित सम्मान के साथ वापस घर भेजा जाता। मंत्रियों, अधिकारियों, स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा ताली बजाकर ऐसे लोगों का जिन्होंने करोना को मात दी थी, स्वागत किया जाता। बुके माला आदि के साथ पर्याप्त मीडिया कवरेज उन्हें मिलता। बचपन में मैंने एक कहानी पढ़ी थी, जिसमें कहानी का नायक अखबार में नाम छुपाने की लालसा से एक कार के नीचे आ गया था। मेरी मनोदशा लगभग वैसे ही हो गई। कहावत है, मांगे मिले ना मौत। अपूरणीय क्षति देकर करोना तो विदा ले ली लेकिन इससे उबर कर सम्मानित होने की मेरी इच्छा अंदर ही दबी-कुचली रह गई। सहानुभूति बटोरने की मेरी दबी-कुचली इच्छा उस समय जागृत हो गई जब मेरी साइकिल चोरी हो गई। चोरी की घटना मैंने व्हाट्सएप ग्रुप पर मित्रों के बीच इस मंशा से पोस्ट की कि वह सहानुभूति के दो शब्द अवश्य कहेंगे। अफसोस प्रकट करेंगे। चलो मांगता भूत का लंगोटी ही सही।

एक ने लिखा यह बहुत दुखद समाचार है कि तुम्हारी साइकिल चोरी हो गई। भगवान करे तुम जीवन भर बिना साइकिल के रहो ।

दूसरे ने लिखा तुम्हारी लाल रंग की साइकिल जो कष्ट का प्रतीक था, चोरी हो गई। जानकर सुकून मिला। अब दूसरी साइकिल मत खरीद लेना सभ्य बनो। कमोबेश सब ने इस घटना पर खुशी जताई। दरअसल छुट्टी के दिन पर आया सुबह में इन मित्रों के घर के पास जाकर घंटी बजाते हुए आवाज लगाता, अरे क्या, अभी सोए हुए ही हो, देखो 1 घंटे साइकिलिंग के बाद में तुम्हारे पास आया हूं। उठोगे नहीं चलो सर पर स्वास्थ्य की चिंता नहीं डॉक्टर को बिल भरते हो बस इतना कह कर चला आता। वह भी पीछे से निर्धारित नगद उनके घर में महाभारत मच जाती छुट्टी की शुरुआत

किच-किच से होती मैं ठोक लेता रहता और आनंदित होता। मुझे समझने में देर नहीं लगी कि इसी का प्रतिक्रिया थी। एक मित्र ने मुझे दिलासा दिया कि उसकी जान पहचान एक साइकिल चोर सरगना से है और वह निश्चित रूप से चोरी की साइकिल वापस दिला देगा। अगले दिन हम दोनों उस सरगना के पास पहुंचे। दंडाधिकारी के समान उन्होंने कुछ प्रश्न पूछे जो चोरी किया स्थान साइकिल की स्थिति आदि के बारे में थी। उन्होंने आश्वस्त किया अगले दिन साइकिल मिल जाएगी । अगले दिन सरगना महोदय ने बताया कि चोरी पेशेवर चोर ने नहीं की है, इसलिए इसका मिलना मुश्किल है। फिर भी मिलने पर मैं सूचित करूंगा। अगले 4 दिनों तक इसकी सूचना न मिलने पर मैंने एक पूर्व परिचित पुलिस अधिकारी से संपर्क किया। उन्होंने कहा कि पुलिस कुछ दिन पूर्व एक पुलिस राजनेता की भैंस खोजने में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी। भारी किरकिरी हुई थी, पुलिस की। क्या साइकिल खोज इससे अलग है? उन्होंने समझाते हुए कहा, यह सब छोटी-मोटी घटना है। फिर भी मैं स्थानीय थाने को इस बारे में कहूंगा। चहूँ ओर से निराश होकर मैंने स्वयं खोजबीन का फैसला किया। सुबह सैर के समय 1 घंटा मैं ध्यान पूर्वक सड़क पर विशेषकर लाल रंग की साइकिल को घुर-घुर कर देखता। शाम को भी समय निकाल कर ऐसा करता। इच्छा थी साइकिल मिले तो फिर सुबह सर्प्राइज के तौर पर दोस्तों को आवाज लगाऊं और उसके घृणा पूर्ण पोस्ट का जवाब दूँ। दिल के किसी कोने में उम्मीद थी कि साइकिल मुझे मिल जाएगी ऐसा उसके साथ लगाव के कारण था अन्यथा नहीं।

अजीब संयोग कहिए या दिल के विश्वास का नतीजा एक दिन सुबह जू के पास एक साइकिल दिखी जो मेरे साइकिल से मिलती जुलती थी। अस्थाई पार्किंग में एक लड़की उसे पार्क की। नजदीक से देखने पर यह स्पष्ट हो गया कि साइकिल मेरी ही है। मैं अधिक उत्साहित हो गया। अरे भाई! मिल गई साइकिल। मेरे मित्र ने समझाया, धैर्य से काम लो, साइकिल हमारी है, सिद्ध करना आसान नहीं है। ऊपर से लड़की का मामला कुछ भी करने पर झमेला हो सकता है। साइकिल खरीद की रसीद मैंने अगले दिन निकाली एवं स्टैंड के पास पड़ोस के लोगों का वस्तु स्थिति से अवगत करा अपने पक्ष में किया। स्टैंड के गार्ड को रसीद उस पर अंकित साइकिल का नंबर आदि का मिलान कर आश्वस्त किया कि साइकिल मेरी ही है। दो-चार दिन में परिस्थितियों अनुकूल कर एक दिन पार्किंग में खड़े साइकिल में मैंने लोहे की कड़ी लगा दी और बाहर इंतजार करने लगा उस लड़की का करीब 40 मिनट के बाद जब लड़की आई तो साइकिल में कड़ी लगी देख चौंक गई। हम लोगों के पहुंचने के पहले ही गार्ड ने उसे वस्तु स्थिति से अवगत करा दिया। हम लोग नजदीक पहुंचे लड़की सभ्य घर की लग रही थी। सभ्य भाषा में मैंने कहा यह साइकिल मेरी है इसके सारे प्रमाण मेरे पास हैं। आशा के विपरीत उन्होंने कहा मैंने इसे मामूली दाम में पास के साइकिल मरम्मती केंद्र से खरीदी है, अगर यह आपकी है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। मैं पटना में दो-तीन दिन ही रहूंगी उसके बाद यह साइकिल का महत्व मेरे लिए नहीं। अगर अभी इस संबंध में कोई झमेला होता है तो मेरा भविष्य दांव पर लग जाएगा। उसके बाद को बीच में ही काटते हुए में मेरे मित्र ने कहा, रहने दो ये चोंचले मैंने जीवन भर ऐसे ही चोर जो हार का सामना किया है, सीधे-सीधे साइकिल वापस करो या परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो। मेरी ओर मुखातिब होते हुए कहा आपके घर की मां बहन की सौगंध मेरी मजबूरी को समझें मुझे साइकिल समेत जाने दे अगले 2 दिन में साइकिल यही लौटा दूंगी। मैंने साइकिल से कड़ी खोलते हुए गार्ड को दे दी कि लौट आने पर वह साइकिल सुरक्षित रख दे। वह फिर कभी नहीं लौटी। मेरे मित्र ने कहा अभी दुनिया को समझे कहां हो वह नाराज भी हुआ। इस घटना ने साइकिल की इच्छा नहीं रही। इस घटना के दो ढाई माह बाद शतरंज के सिलसिले में मुंबई गया। निर्धारित कार्य के अतिरिक्त समय मुंबई के साइड सीन पर प्रतिदिन एक दो सहकर्मी के साथ निकलता। ट्रैफिक फुटपाथ ऊपर की भीड़ यहां सर्वत्र नजर आती। एक दिन सड़क पर चलते-चलते एक चेहरे पर नजर पड़ी जो जान पहचान की लगी। दिमाग पर जोर डालने पर भी उसका नाम ध्यान में नहीं। वह तेज कदम से चलता जा रहा था मैंने आवाज लगाई वह नीली शर्ट वाले भाई साहब। पुनः आवाज लगाई अरे! वो पटना वाले भाई साहब। कोई प्रत्युत्तर नहीं। अब वह पास के सीड़ी से नीचे उतरने ही वाला

था और आंखों से ओझल होने ही वाला था। जोर लगा कर मैं चिल्लाया-रोल नंबर-37, उसके कदम रुक गए हाथ उठाकर रिस्पांस किया और अगले कुछ ही पलों में मेरे सामने आ पहुंचा। पास आते हैं। उसका नाम भी मुझे याद आ गया अरे विजय! क्या हाल है? देखो! कितने दिनों के बाद कैसे हम लोग मिले हैं। पूरी आत्मीयता से उन्होंने मुझे गले लगाया पुरानी यादों के साथ वर्तमान व्यवसाय आदि की चर्चा हम दोनों के बीच हुई। विजय मेरा सहपाठी है और वर्ग 6 से 10 तक की पढ़ाई हमने साथ-साथ पटना में की है। कक्षा में शिक्षक महोदय सबसे पहले उपस्थिति दर्ज करते है। वे रोल नंबर 123-----आदि बोलते और रोल नंबर वाले छात्र यस सर ''प्रजेंट सर'' बोलते हैं। लेकिन रोल नंबर 37 के पुकार पर उन्हें कोई जवाब नहीं मिलता। जब कि यह रोल नंबर इसी विजय का था और यह कक्षा में मौजूद रहता। तीन-चार बार शिक्षक महोदय पुकारते तो एकाएक विजय बोल पड़ता प्रजेंट सर। शिक्षक महोदय की सख्त हिदायत थी कि रोल नंबर 37 वे कभी भी बोल सकते हैं और प्रत्युत्तर ना मिलने की दशा में वह दंड का भागी होगा। कभी-कभी उपस्थिति दर्ज रोल नंबर 37 के साथ ही शुरू होती। शायद ही ऐसा कभी हुआ हो कि विजय ने पहली बार में ही ''प्रजेंट सर'' बोला हो। पूरे स्कूल में रोल नंबर 37 विलंब, अनसुना का पर्याय बन गया। रिस्पांस ना देने वाले को रोल नंबर 37 की उपाधि दी जाती। स्कूल के आसपास की दुकान पुस्तकालय आदि जहां विलंब होता लोग कहते थे-रोल नंबर 37 है । यही विजय मात्र एक पुकार पर मुंबई की सड़क पर रिस्पांस दिया। युग परिवर्तन का प्रभाव। अब वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में एक्सक्युटिव है। जब मिलन की इरादा भंग हुई तो देखा विजय के साथ वह साइकिल चोरनी भी खड़ी है। विजय ने कहा मिलो यह धर्मपत्नी है अभिवादन पश्चात उस महिला ही ने कहा विजय जो साइकिल वाली घटना बताई थी वह साइकिल इन्ही की थी। अरे भाई कोई बात नहीं उस साइकिल पर आपका अधिकार था भले ही हम एक दूसरे को नहीं जानते थे। परंतु यह अपने ही है मेरे मन में उसके प्रति जो घृणा थी वह उसकी व्यवहार से मिट गया था। हां एक बात मैंने भी जैसे कहा कि हमारे बाल बच्चों का स्कूलिंग पूरा हो गया है और अभी तुम शादी ब्याह रचाए हो। उन्होंने कहा रोल नंबर 37 जो ठहरा कुछ तो प्रभाव रहेगा। इस बात पर हम दोनों ने एक जोरदार ठहाका लगाया स्कूलों दिनों की याद ताजा हो गई ।

आज हम भौतिक रूप से जितना ही समृद्ध हो परंतु समय के मामले में दरिद्र हैं। उन्होंने अपना पता मुझे देते हुए घर आने का निमंत्रण देकर विदा ली। समय की दरिद्रता मुझ में भी कम नहीं निर्धारित अवधि के बाद पटना लौट आया।

मेरे मित्र जिसने साइकिल चोरी पर खुशी जताई थी ने पोस्ट किया बधाई हो चोर को आखिरकार तुम ने पकड़ लिया। कैसा चोर! कैसा सिपाही! सभी घटनाएं परमपिता परमेश्वर के इशारे पर होता है। उसकी इच्छा के बिना छोटी सी छोटी घटना भी घटित नही हो सकती। इसके पीछे कल्याणकारी भावनाएँ जूड़ी होती है। हमें इसकी जानकारी नहीं होती है और अज्ञान की वजह से व्यर्थ ही हर्ष विषाद करते हैं। उसके कृत्य पर हर्ष-विषाद, टीका-टिप्पणी ना कर हमें अपना कर्म सुधारना चाहिए। बस सत्य कर्म की चिंता हम सबके करनी चाहिए बाकी चिंता व्यर्थ है।

पतन

बंशीधर मिश्रा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

"पतन" अपने आप में कुछ भी नहीं है, परंतु इसकी सार्थकता (वास्तविकता में इसे निरर्थकता / बेकार की बात कही जा सकती है) बहुत हीं व्यापक है । इस शब्द को सामान्यतया इतिहास से जोड़कर अध्ययन किया जाता रहा है । कारण कि, शासन /सत्ता के पतन के अध्ययन को ही हमेशा से इसके अध्ययन का आधार माना जाता रहा है

'मराठा साम्राज्य का पतन;
मुगल साम्राज्य का पतन;
कुस्तुनतुनिया का पतन';
गुप्त साम्राज्य का पतन आदि-आदि ।

इतिहास के पन्नों में मिलने वाले कुछ पतन हैं। हिटलर, मुसोलिनी एवं सिकंदर के साम्राज्य के पतन को भी भुलाया नहीं जा सकता है । इन पतनों के कारणों की समीक्षा में एक बात सबों में समाहित है कि अपनों का साथ ना देना, धोखा देना, भीतर घात करना आदि -आदि सदृश कारण रहे हैं । कहा भी गया है - **इंसान का पतन उस समय शुरू हो जाता है जब वह अपनों को नीचा दिखाने के लिए /गिराने के लिए सलाह गैरों से लेना शुरू कर देता है/ दूसरों की बात मान लेता है ।**

वर्तमान समय में पतन के कई नई प्रकार के कारण समाज में दिख पड़ रहें हैं । इनमें नैतिक पतन, सामाजिक पतन, आर्थिक पतन, राजनीतिक पतन, परिवारिक पतन आदि- आदि अनेकों प्रकार दिख पड़ रहे हैं । परंतु, इन पतनों के शिकार लोगों को इस बात का अहसास तक नहीं होता है । वास्तव में यदि ऐसा होने लगे तो आंशिक रूप से शिकार होने पर ही संभल जाया जा सकता है।

नैतिकता की दृष्टि से यह भी कही गई बात द्रष्टव्य है ख्र **"जो स्त्री का अपमान करता है वह मां का अपमान करता है, जो मां का अपमान करता है वह भगवान का अपमान करता है और जो भगवान का अपमान करता है उसका पतन निश्चित है''** । निष्कर्षत: पतन से बचाव का आधार नैतिकता भी है । कहने वाले तो ऐसा भी कहा करते हैं कि **"पतन मृत्यु से कम नहीं''** ।

इसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज के दिनों में लोगो में अवसाद (डिप्रेशन)का होना और इस कारण अपनी जान तक दे देना देखा जाता है । भगवान श्री कृष्ण ने भी पतन की व्याख्या करते हुए कही है, **क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है, तब तर्क नष्ट हो जाता है । जब तर्क नष्ट हो जाता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है ।**

अध्ययन से यह बात भी स्पष्ट हो चली है कि विश्वास, अविश्वास , अंधविश्वास- इन तीनों का भी पतन की दिशा में असर पड़ता है । ऐसे ही नहीं कहा गया है - **विश्वास उदय का कारण बनता है और अंधविश्वास पतन का कारण बनता है ।** उपर्युक्त बातों के साथ-साथ इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र, राष्ट्र से विश्व का निर्माण होता है । कुल मिलाकर वैश्विक स्तर पर व्यक्ति के पतन के कारणों को दूर किया जा सके तो पतन वास्तविकता में निरर्थक हो जाएगा ।

व्यक्ति के बारे में कहा भी गया है।

"षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता । निद्रा तंद्रा भयम् क्रोधः आलस्य दीर्घ सूत्रता "। अर्थात छः अवगुण व्यक्ति के पतन का कारण बनते हैं - नींद, तंद्रा, डर, गुस्सा, आलस्य और काम को टालने की आदत ।

यदि व्यक्ति हर दृष्टि से सही हो तो परिवार सही हो तो परिवार सही होगा । परिवार सही होगा तो राष्ट्र सही होगा सभी राष्ट्र सही होंगे तो विश्व सही होगा । यह मतभिन्नता के कारण संभव नहीं बन पाता है परंतु, बावजूद इसके इस दिशा में क्रियाशीलता हीं सच कहीं जाए तो विश्व को संरक्षित भी करता है।

भारत के परिप्रेक्ष्य में पतन का सबसे बड़ा कारण तकनीकी रुप से विकसीत होने के कारण गलत ज्ञान अर्जन करना, गलत दिशा में सोंच का पैदा होना, साईबर क्राईम, युक्तियों के प्रति व्यभिचार होना सहित अनेकों दिशा पैदा की है । इस दिशा में दिग्भ्रमित व्यक्ति का अन्त/पतन समय पूर्व हो हीं जाता है , ऐसा अनेकों मामला आये दिन प्रकाश में आता रहता है ।

मेरी प्यारी माँ

चिराग नंदन
पौत्र-माधवी सिंहा
वरिष्ठ लेखाकार

सबसे प्यारी मेरी मां ।
खुशियां देती मेरी मां ।।

चलना हमें सिखाती मां ।
कामयाबी तक पहुंचाती है मां ।।

सबसे मीठा बोल है मां ।
दुनिया में अनमोल है मां ।।

रोज प्यार से खिलाती मां ।
लोरी गाकर सुनाती मां ।।

सारे दुख हर लेती मां ।
बदले में प्यार लुटाती मां ।।

सबसे पहला एहसास है मां ।
बच्चों के लिए खास है मां ।।

सबसे प्यारी मेरी मां ।
खुशियां देती सारी मां ।।

माँ की ममता

प्रिती कुमारी
द्वारा-धीरज कुमार, वरिष्ठ लेखाकार

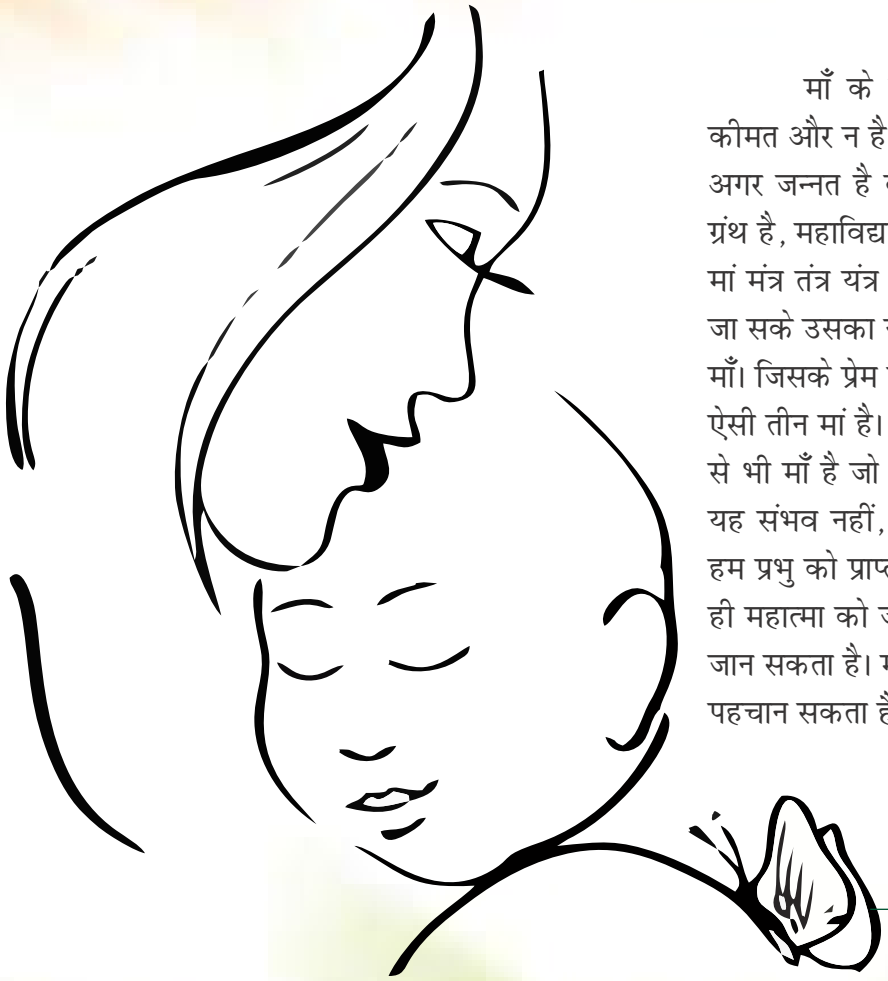

माँ के प्यार का न है कोई जवाब, न हीं उसकी कोई कीमत और न है हिसाब। मां की ही वह बोध है जहां मानवता पले, अगर जन्नत है कहीं तो उसके आंचल के तले। मां पूर्ण शब्द है, ग्रंथ है, महाविद्यालय है, यह मंत्र बीज है, हर जनता का आधार है। मां मंत्र तंत्र यंत्र की सफलता की नीव है, मां जिसे कोई उपमा दी जा सके उसका नाम है, मां जिसकी कोई सीमा नहीं, उसका नाम है माँ। जिसके प्रेम को कभी पतझड़ स्पर्श ना करे, उसका नाम है- मां ऐसी तीन मां है। परमात्मा, महात्मा और मां प्रभु को पाने की पहली से भी माँ है जो तलहटी की गणना करें। वह शिखर को प्राप्त करें यह संभव नहीं, ऐसी मां की गणना करके हजारों माला गिन कर हम प्रभु को प्राप्त करें, यह बात बहुत ही दूर है। माँ को जाने वाला ही महात्मा को जान सकता है मां को जानने वाला ही परमात्मा को जान सकता है। महात्मा एवं परमात्मा वही बन सकता है, जो मां को पहचान सकता है।

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति
को सार्थकता प्रदान करती है ।
हिंदी ने इन पहलूओं को सूबसूरती से समाहित किया है ।

नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री)

धन की माया

प्रिती कुमारी
द्वारा-धीरज कुमार, वरिष्ठ लेखाकार

धन से शैय्या खरीदी जा सकती है, नींद नहीं। धन से पुस्तकें खरीदी जा सकती है, ज्ञान नहीं। धन से भोजन खरीदा जा सकता है, हाजमा शक्ति नहीं। धन से दवाएं खरीदी जा सकती है, स्वास्थ्य नहीं। धन से मकान खरीदा जा सकता है, घर नहीं। धन से विलासिता खरीदी जा सकती है, सभ्यता नहीं। धन से आमोद-प्रमोद खरीदा जा सकता है, खुशी नहीं। धन से प्रसाधन सामग्री खरीदी जा सकती है, सुंदरता नहीं। धन से देवालय खरीदा जा सकता है, निर्मलता नहीं। धन से नौकर खरीदा जा सकता है, मित्र नहीं। धन से धन खरीदा जा सकता है समानता नहीं। धन से विषय सुख खरीदा जा सकता है, प्यार नहीं। धन से आदमी खरीदे जा सकते हैं, विश्वास नहीं। धन से वस्तुएं खरीदी जा सकती है, शांति नहीं। धन से सामाजिक स्थिति खरीदी जा सकती है, कुलीनता नहीं। धन से मान्यता खरीदी जा सकती है, प्रतिष्ठा नहीं। धन से पदवी खरीदी जा सकती है, महानता नहीं। धन से सेवा खरीदी जा सकती है, स्वामी भक्ति नहीं। धन से शक्ति खरीदी जा सकती है, प्रभाव नहीं। धन से इंसान खरीदा जा सकता है, इंसानियत नहीं।

विदाई

प्रतिमा कुमारी
सहायक पर्यवेक्षक

ऐ मेरी आंखें। इस मधुर बेला में तू क्यों भर आई ।
बड़े अरमानों से इसी दिन के तो तूने सपने थी सजाई ।।

घोड़ी चढ़ संग बारात ले घर आएंगे जमाई ।
बजेंगे द्वार मेरे बाजन और शहनाई ।।

लाल चुनरिया में होगी लाडली बेटी की विदाई ।
खुशी के इस सुनहरे पल में तू है भर आई ।।

सभी दे रहे हैं मुझे ''बेटी के ब्याह'' की बधाई ।
एक तू है कि आंसू की झड़ी है लगाई ।।

ना कर बेवफाई, कर लेने दे मुझे बेटी बिदाई ।
मेरा रोम-रोम पुलकित हो रहा, नई उमंग भर आई ।।

आशीष दे रहा है ह्रदय, युग-युग जीये बेटी संग जमाई ।
ऐ मेरी आंखें न कर बेवफाई, कर लेने दे बेटी विदाई ।।

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रुप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है ।

अमित शाह (गृह मंत्री)

माँ

प्रतिमा कुमारी
सहायक पर्यवेक्षक

'मां' शब्द यूं ही नहीं सब के हृदय में समाया ।।

कभी पहुँचे न तुझे दु:ख बस यही अभिलाषा ।
आजीवन कर सकूं तेरी सेवा सुश्रषा ।।

मां तेरी चरणों में कोटि-कोटि नमन ।
श्रद्धा का हर पुष्प है तुझे अर्पण ।।

मां तू अनमोल प्यार का पर्याय ।
जीवन की शुरूआत का अध्याय ।।

जो भी पाया तुम से ही पाया ।
हुई निर्मित यह तुम्ही से काया ।।

हर झंझावात से तूने ही बचाया ।
कोई गम कमी छूने न पाया ।।

कदम-कदम पर तेरी शिक्षा काम आया ।
तेरा संस्कार मैंने मन में है बसाया ।।

स्वार्थ से परे मां एक तेरा ही प्यार ।
यूं तो है यहां रिश्तो का अंबार।।

कैसे उऋण तेरा हो सकता कोई ।
तूने जितना दिया, क्या दे सकता कोई ।।

सृष्टि के कण-कण में तू है समाई ।
यह प्रकृति भी मां तेरी ही परछाई ।।

जिधर भी मेरी निगाहें जाती ।
मां तू ही तू है नजर आती ।।

त्याग की मूर्ति तू देवी महामाया ।

वह बरसात

रूद्र प्रताप सिंह
सुपुत्र-शंकर लाल सिंह
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

कुछ महीने पहले की बात है, एक शाम मुझे और मेरे पिताजी को फल और सब्जियां खरीदने बाहर जाना था। हम लोग सब्जियां खरीदने के लिए मीठापुर जाने वाले थे, जो हमारे घर से 2 किलोमीटर दूर था। हमने सोचा कि हमें पैदल चलकर बाजार जाना चाहिए। लगभग 5:00 बज रहे थे जब हम घर से निकले थे। वहां जाने के रास्ते में रेलवे ट्रैक था। हम जब वहां पहुंचे तब हमने देखा कि वहां एक रेलगाड़ी खड़ी थी। उसके नीचे से चलकर हम बाजार पहुंच गए। हमने सब्जियां और फल इत्यादि खरीदें। सब्जियां खरीदने के बाद हम लोग जाने लगे। मुझे याद आया कि अपने विद्यालय से मिले प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए कुछ स्टेशनरी चाहिए था। स्टेशनरी के लिए हम स्टेशनरी दुकान पर गए तो देखा कि वहां बड़ी भीड़ लगी हुई थी। हमें वहां बहुत देर हो गई हमने वहां से सीधा घर चलना शुरू किया। उस ट्रेन के नीचे से निकल कर कुछ देर चलने के बाद बहुत तेज बारिश होने लगी। हमारे पास छाता नहीं था। हम बारिश में भीगंते भीगंते एक दुकान पर पहुंचे वहां रूक कर हम लोग मौसम का जायजा लेने लगे। हमें पता चला कि बारिश संभवत: अगले दिन रूकने वाली थी। मेरे पिताजी को रात 8:00 बजे कोई जरूरी काम था और अभी 7.30 बज रहे थे। हम बारिश में भींगते-भींगते घर जा रहे थे कि बिजली चमकने लगी तो हम दौड़ने लगे। कुछ दूर तक दौड़ने के बाद हमने देखा कि आगे कीचड़ था। वहां बहुत फिसलन थी। हमने दौड़ने से ज्यादा चलना उचित समझा। जिस रास्ते से हम घर जा रहे थे उस रास्ते पर कोई ऐसी जगह नहीं थी जहां हम किसी प्रकार की छाया में रूक सके। हम लगभग 500 मीटर दूर थे जब हम पूरी तरह से भींग चुके थे और ठंड से कांप रहे थे। हम जल्दी-जल्दी चलकर घर के पास

वाली सड़क के पास पहुंचे वहां पानी भरा हुआ था और बिजली की आवाज चारों ओर गूंज रही थी। रास्ता देखते-देखते हम आगे बढ़ रहे थे। मेरा ध्यान किसी और जगह गया। मैंने देखा कि नाले में पानी नहीं जा रहा था। नाला पूरी तरह से भरा था। मेरा ध्यान कहीं और रहने के कारण मेरा पैर एक गड्ढे में चला गया। मैंने जो पायजामा पहना हुआ था वह बहुत गंदा हो गया। जब हम घर पहुंचे तब रात के 7.45 बज रहे थे। घर पहुंचने के बाद मैंने जाकर स्नान किया और दूसरे कपड़े पहने। मेरे पिताजी ने वह जरूरी काम पूरा कर लिया। मुझे सर्दी हो गई तो मां ने मुझे कुछ गर्म कपड़े दिए। हम तो भींग गए थे लेकिन हमारे सामान को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। घर की बिजली कटी हुई थी। घर में बहुत अंधेरा था। इसलिए मां ने मोमबत्तियां जलाई तो घर में रोशनी हुई। चारों ओर बिजली की आवाज गूंज रही थी। मेरा छोटा भाई जो 2 साल का था, वह बिजली की आवाज से डर रहा था और जाकर बार-बार पलंग के नीचे छुप जा रहा था। मां उसे गले से लगाया तो उसका डर कम हुआ। खाना खाकर सब सो गए। उस रात मुझे नींद नहीं आ रही थी तो मैंने कुछ देर तक पढ़ कर सो गया। अगली सुबह जब में उठा तो बारिश शांत हो गई थी लेकिन कुछ देर बाद फिर बारिश होने लगी। माँ ने गरमा-गरम पकोड़े तथा चाय बनाए। घर में चीनी नहीं थी तो माँ ने मुझे चीनी खरीदने के लिए पैसे दिए। मैं पैसे लेकर पास वाले दुकान के पास गया तो देखा कि बारिश का पानी भरा हुआ था तथा कुछ छोटे-छोटे बच्चे उस पानी में मस्ती कर रहे थे। मैं दुकान से चीनी खरीद कर घर जाने लगा तो कुछ ज्यादा ही तेज बारिश होने लगी। लगभग 2 घंटे बाद जब बारिश रूकी तब सारा वातावरण शांत हो गया था। सारे पेड़-पौधे हरे भरे दिख रहे थे। सफाई कर्मचारी ने आकर नाले को साफ किया तो जमा हुआ पानी वहां से बहकर चला गया। सूरज निकल चुका था और मौसम बहुत सुहावना लग रहा था लेकिन पिछले साल की बारिश मैं कभी नहीं भूला पाऊंगा।

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है,
जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है ।

मदन मोहन मालवीय

समय की यात्रा

रूद्र प्रताप सिंह
सुपुत्र-शंकर लाल सिंह
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

कंप्यूटर से सजा एक कमरा जिसमें आधुनिक मशीनों से बना हुआ सामान रखा हुआ था जिसमें कई मशीनें लगी थी। कमरे के एक कोने में एक मेज और कुर्सी थी। उस पर बैठा शख्स उठा और एक कंप्यूटर पर कुछ देख कर बोला महेंद्र हमारा लक्ष्य पूरा हुआ। शख्स का नाम प्रोफेसर रोहित था और महेंद्र उनका सहायक था। प्रोफेसर के कंप्यूटर ने समयचक्र की किरणों को पकड़ लिया था। प्रोफेसर रोहित ने कहा समय की अबोध गति पर हमारे समय ने विजय हासिल कर ली। अब हम समय की सीमा को चीर कर किसी भी काल, किसी भी समय में बड़ी आसानी से जा सकते हैं। मुबारक हो सर, आज आपकी वर्षों की मेहनत सफल हो गई। आपका यह अविष्कार नि:संदेह मानव कल्याण में उपयोगी सिद्ध होगा। महेंद्र ने कहा। धन्यवाद महेंद्र पर यह मत भूलो कि इस महान सफलता में तुम्हारा भी बराबर का योगदान है। यह तो आपका बड़प्पन है सर, वरना मैं क्या और मेरा.....। महेंद्र अपने आप पर ही हंस पड़ा। एक बार फिर प्रोफेसर रोहित अपने सहयोगी महेंद्र के साथ अपनी यात्रा की तैयारी में व्यस्त हो गए। एक ऐसी यात्रा जो वर्तमान से भविष्य की ओर जाती थी। एक खूबसूरत कल्पना, जो हकीकत में बदलने जा रही थी और जोड़ने वाला था मानवीय उपलब्धियों के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय।

वातावरणीय परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए प्रोफेसर ने एक विशेष प्रकार की स्वनिर्मित पोशाक ली थी। अब वे किसी अंतरिक्ष यात्री की भांति लग रहे थे जो किसी नवीन ग्रह की खोज में अनंत आकाशगंगा में प्रवेश करने वाले हो। उस 7 फुट लंबे समय यान जिसमें 5 लोग जा सकते थे उसमें जाते ही प्रोफेसर का शरीर रोमांचित हो उठा। अंदर पहुंचते ही उन्होंने कंप्यूटर को चालू कर दिया। आहिस्ता से समय यान आधा फिट ऊपर उठा। बहुत तेज घूमने लगा। वह इतनी तेज घुमा जैसे लगा कि उसका दरवाजा गायब हो गया। लेकिन अंदर सब शांत और अस्थिर था। वे तेज प्रकाश के साथ गायब हो गया। समय यान के कंप्यूटर पर साल बदल रहे थे और वह सब आगे की ओर जा रहे थे। 2000, 2050, 2100, 2200 कर-कर बीत रहे थे।

समय यान 2600 ई० पर जाकर रुक गया। प्रोफेसर ने कंप्यूटर की घड़ी में देखा तो उन्हें पता चला कि वह 2000 ईस्वी से 2600 ईस्वी तक की यात्रा 20 सेकंड में कर ली। उन्होंने समय यान का दरवाजा खोला और बाहर गए, तो उन्होंने देखा दूर-दूर तक रेत ही रेत है। उन्हें कहीं जीवन का नामोनिशान नही मिला। सूरज की रोशनी बहुत तेज थी। वातावरण बहुत प्रदूषित और गर्म था। तभी उन्हें एक यान जैसी चीज उड़ती दिखी। वह बहुत बड़ा और गोल था। वह एक जगह जाकर रूका। प्रोफेसर को आशा मिली और वह उस और ऐसे दौरे जो वे युवावस्था में भी न दौड़े थे। वह दौड़ते दौड़ते भविष्य का वातावरण देख रहे थे। भविष्य का वातावरण 2000 ईस्वी के वातावरण से बिल्कुल अलग था। वह दौड़ते दौड़ते एक पारदर्शी कांच की दीवार से टकरा गए। टकराने से वह अपना संतुलन खो दिए और वह वहीं पर गिर पड़े।

अचानक उनपे एक लाल रोशनी पड़ी। रोशनी पड़ते ही उन्हें एक जोर की आवाज आई। आवाज बिल्कुल एंबुलेंस की तरह थी। तभी प्रोफेसर को एक यान ने ऊपर लिया कि वह बेहोश हो गए। जब उन्हें होश आया तो वे एक अजीब कैद खाने में थे। वहां एक सुंदर नल और हवा में उड़ने वाला बिस्तर था। उस समय रात हो रही थी। कैदियों को भोजन देने का समय था। एक आदम कद रोबो वहां आया और एक थाली को ढक कर अपने प्रोफेसर को कुछ खाने के लिए दिया। थाली में एक कैप्सूल थी और लिखा हुआ था ''कैप्सूल दवा नहीं'' खाना है इसे खाकर पानी पीना आवश्यक है।

ये अजीब बातें उन्हें समझ नहीं आ रही थी। उन्होंने वैसा ही किया और फिर सोने के लिए बिस्तर पर गए और जाकर उस पर जैसे ही लेते उन्हें तुरंत नींद आ गई।

अगली सुबह वे एक जोर की आवाज के कारण उठे। एक और रोबोट वहां आया और उन्हें प्रोफेसर को अपनी उंगली से ट्रांसमिट कर दिया। कुछ देर बाद प्रोफेसर एक जगह पर पहुंचे जो बिल्कुल अदालत जैसी थी। वहां जज एक ऊंची कुर्सी पर बैठे थे और कुछ दूर पर कुछ दर्शक बैठे थे और मुलाजिम के कटघरे में स्वयं प्रोफेसर रोहित। उन्हें बड़ी हैरानी हुई कि वहां सारे लोग पीली चमड़ी वाले थे। यह शायद वातावरणीय परिवर्तनों का परिणाम था ।

आपका यहां स्वागत है पुरोहित वहां खड़े वकील ने बोला।

वकील के मुंह से अपना नाम सुनकर प्रोफेसर हैरान हो गए। वे अपने मनोभावों को नियंत्रित करते हुए बोले ''मैं आपके पूर्वज की हैसियत से सन 2000 से आप लोगों के लिए दोस्ती का पैगाम लाया हूं।''

वकील गरज उठा, आप लोगों ने तो अपने वंशजों के लिए जीते-जी कब्र तैयार कर दी। आज हम लोग उन्हें

कब्रों में जाने के लिए मजबूर हैं। क्या यही है आपकी दोस्ती का तोहफा। ''

''मैं कुछ समझा नहीं''

इस समय आप जिस अदालत में खड़े हैं वह जमीन से 10 फीट नीचे की सतह पर बनी हुई है। ''वकील ने कहना शुरू किया, प्रदूषण, ऑक्सीजन की कमी और सूरज की अल्ट्रावायलेट किरणों से बचने के लिए इसके सिवा हमारे पास कोई चारा नहीं था।''

आज पृथ्वी पर वृक्षों का नामोनिशान मिट चुका है, ओजोन की छतरी विलीन हो चुकी है, समुद्रों का जलस्तर बेतहाशा बढ़ गया है और आंधी तूफान तो धरती की ऊपरी सतह पर मानो रोज की बात है।''

प्रोफेसर रोहित यात्रा वत खड़े थे और वकील बोले जा रहे थे, यह सब पर्यावरण से छेड़छाड़ और वृक्षों के विनाश का परिणाम है। आज हम लोग ना ज्यादा हंस सकते हैं और ना ज्यादा बोल सकते हैं। कृत्रिम ऑक्सीजन के सहारे हम जिंदा तो है पर एक मशीन बनकर रह गए हैं। और हमारी इस जिंदगी के जिम्मेदार आप हैं, आपके समकालीन लोग हैं। आप अपराधी हैं अपराधी। आप को सजा मिलनी ही चाहिए, सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।''

कहते-कहते वकील का चेहरा लाल हो गया और वह हाँफने लगा। निश्चित रूप से यह ऑक्सीजन की कमी का परिणाम था।

मानवीय अधिकारों की रक्षक या अदालत मुलाजिम को अपराधी मानते हुए उसे सजा-ए-मौत का हुक्म सुनाती है। जज की गंभीर आवाज होल्स में गूंज उठी।

जल्लाद रूपी रोबो ने प्रोफेसर को अंतिम बार ट्रांसमिट किया। जब उन्हें होश आया तो उन्होंने स्वयं को ब्लैक होल में समाते हुए देखा। दिल दहलाने वाला दर्द को सोचते ही प्रोफेसर के मुंह से भय मिश्रित चीख निकल गई। डर के कारण उनकी आंखें अपने आप ही बंद हो गई थी।

लेकिन जब उनकी आंख खुली, तब अपने प्रयोगशाला के आराम कुर्सी पर बैठे थे। उस कुर्सी पर बैठे-बैठे हुए स्वप्न देख रहे थे। पास में ही समय यान खड़ा था जो कि अपने आरंभिक चरण में था।

''सर समय चक्र की किरणों की जांच हो गई है। आप आकर देख लीजिए।'' यह आवाज उनके सहायक महेंद्र की थी ।

''नहीं महेंद्र, अभी हमें भविष्य की नहीं, बल्कि अपने समय को देखना है। वह यह कह कर दरवाजे से बाहर चले गए।

एक बूँद

देव प्रताप सिंह
सुपुत्र-शंकर लाल सिंह
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

वह पावस का प्रथम दिवस जब
एक बूंद धरा पर आई
अंकुर फूट पड़ा धरती से
नव जीवन की ले अंगड़ाई

धरती के सूखे अधरों पर
गिरी बूँद अमृत से आकर
वसुंधरा की रोमावलि-सी सॉ
हरी दूब फुलकी मुस्काई
एक बूँद धरा पर आई

आसमान में उड़ता सागर
लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर
बजा नगाड़े जगा रहे हैं
बादल धरती की तरूणाई
एक बूँद धरा पर आई

नीले नयनों-सा यह अंबर
काली पुतली सी यह जलधर
करूणा-विगलित अश्रु बहाकर
धरती की चीर प्यास बुझाई
बुढ़ी धरती सस्य शस्य-श्यामला
बनने को फिर से ललचाई
एक बूँद धारा पर आई

ग़ज़ल

राम सिंगार चौहाण
सहायक लेखा अधिकारी

आईने टूट कर सब फ़ना हो गए ।
जिनका पत्थर था दिल देवता हो गए ।।

उनकी सूरत के काइल हुए इस क़दर ।
उस शहर के ही हम डाकिया हो गए ।।

इब्तिदा वो ही है इंतहा वो ही है ।
बंदगी भी वही ज्यूँ खुदा हो गए ।।

शोहरतों में तो वो, साथ चलते रहें ।
आयी जो मुफ़्लिसी तो जुदा हो गए ।।

एक दूजे के बिन दोनों कुछ भी नहीं ।
तुम महक फूल की हम हवा हो गए ।।

आप तो मेरे रंग में रंगे ना कभी ।
और हम एक थे आप सा हो गए।।

वो ''मलक'' आँख से ऐसे ओझल हुए ।
खुशनुमा सारे मंजर खफा हो गए।।

ग़ज़ल

राम सिंगार चौहाण
सहायक लेखा अधिकारी

इक दफ़ा सम्त मेरी नजर कीजिए।
आँख के रास्ते दिल में घर कीजिए ।।

हिचकियाँ आज कल सोने देतीं नहीं ।
यूँ न सोचा मुझे रात भर कीजिए। ।

मेरे ही रूबरू गैरों से गुफ़्तगू।
आप इतनी तो मेरी क़दर कीजिए।।

धड़कनों की सदा सुनके आ जाए वो ।
अपनी चाहत का ऐसा असर कीजिए ।।

एक दिल के सिबा कोई भी घर नहीं ।
प्यार हमसे जरा सोच कर कीजिए ।।

चलके कैफे में पीते हैं कॉफी सनम ।
दिल की बातें जरा बैठ कर कीजिए।।

सारा दिन ख्वाब में काट लीजै मगर ।
मेरी बाँहों में शब से सहर कीजिए।।

माँगने से मदद जाती है आबरू ।
ज़िन्दगी जैसे-तैसे बसर कीजिए ।।

दर्द कम करने में हम तो नाकाम हैं ।
ऐ खुदा जिन्दगी मुख़्तसर कीजिए।।

ख्वाब तक बेच देते हैं अक्सर "मलक" ।
प्यार व्यापार सब देखकर कीजिए।।

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है ।

पुरुषोत्तम दास टंडन

मेरा देश

पल्लवी राज
पुत्र-सत्येन्द्र माँझी
लेखाकार

मेरे देश का नाम भारत है। भारत को 'इंडिया' तथा 'हिंदुस्तान' के नाम से भी जाना जाता है। यह एशिया नामक महाद्वीप भी है जो विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। मेरा प्यारा देश प्राचीन परंपराओं का देश है जो हमारे दिल के बहुत करीब है। यहां अनेक भाषाओं और बोलियों को बोलने वाले लोग निवास करते हैं।

मेरा देश धार्मिक विविधताओं वाला देश है। हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम आदि धर्मों को यहाँ एक समान दृष्टि से देखा जाता है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है।

भारत की सभ्यता और संस्कृति दुनियाभर में विख्यात है। इसी से अभिभूत होकर लाखों विदेशी नागरिक प्रतिवर्ष यहां घूमने के लिए आते हैं इससे हमारे देश का संस्कृति उन्हें देखने मिलती है उससे हमारे देश को बहुत सारी डॉलर के रूप में मुद्राएं प्राप्त होती है और देश के सांस्कृतिक विकास में बढ़ोतरी होती है। साथ ही हमारे देश की संस्कृति पूरे विश्व में लोकप्रिय होकर हमारे सांस्कृतिक विरासत की उद्घोषणा करती है। जय भारत, जय किसान।

कोरोना

पल्लवी राज
पुत्र-सत्येन्द्र माँझी
लेखाकार

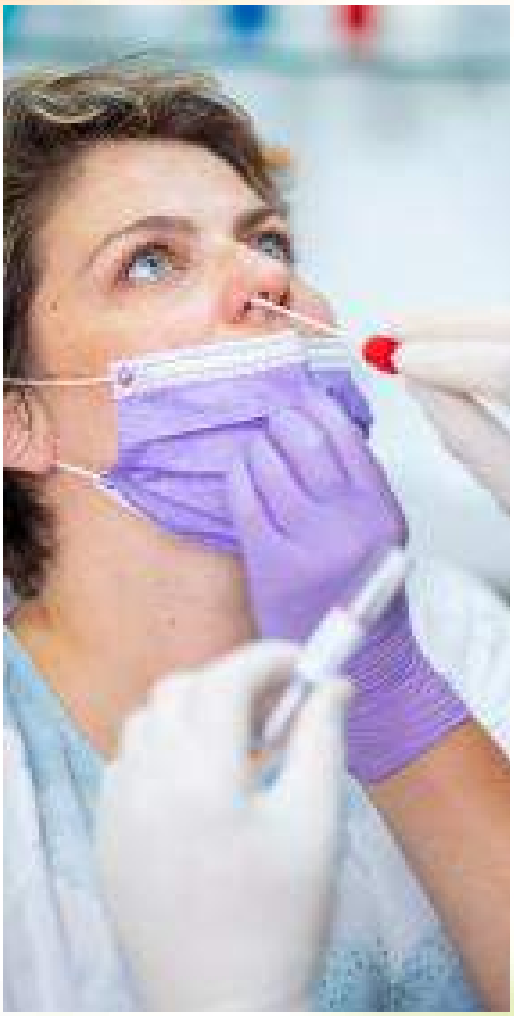

सब कुछ हो गया पर पराया-पराया ।
तेरा आना किसी को ना भाया।।

मम्मी बोले हाथ धोंए।
घर से बाहर कहीं ना जाएं।।

सखी-सहेली सब भूल जाए।
स्कूल टीचर की याद सताए।।

नानी का घर हमें बुलाए।
शॉपिंग के लिए मन ललचाए।।

बर्थडे फीका-फीका पड़ जाए।
ओ कोरोना! तू बता, हम नन्हें बच्चे कैसे अपना दिल बहलाए।।

कोरोना तुझसे नहीं डरते हम।।
हम में है तुझ से लड़ने का दम।

सोशल डिस्टेंसिंग निभाएंगे।।
गुड सिटीजन बनकर दिखाएंगे।।

सरकार के रूल्स अपनाएंगे ।।
कोरोना को मिलकर हराऐंगे।।

मजदूर के जूते

ऋषभ माँझी
पुत्र-सत्येन्द्र माँझी
लेखाकार

एक बार एक अमीर आदमी अपने बेटे के साथ कहीं जा रहा था। तभी उन्हें रास्ते में एक जोड़ी पुराने जूते दिखे जो संभवत पास के खेत में काम कर रहे मजदूर के थे। मजदूर काम खत्म करके घर लौटने की तैयारी कर रहा था। तभी बेटे ने अमीर पिता से कहा कि, ''पिताजी! क्यों ना इन जूतों को छुपा दे, मजदूर को परेशान देखकर बड़ा मजा आएगा।'' आदमी ने गंभीर होकर कहा किसी का मजाक उड़ाना सही नहीं है। इसके बजाय क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और देखें कि मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है।'' बेटे ने वैसा ही किया और फिर पिता-पुत्र ने छिपकर मजदूर को देखने लगे। काम खत्म करके आए मजदूर ने जब जूते पहने तो उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ। उसने जूतों को पलटा तो उसमें से सीकके निकल आएं मजदूर ने इधर-उधर देखा जब उसे कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब में रख लिए और बोला कि, हे भगवान! उस अनजान सहायक का धन्यवाद जिसने मुझे यह सिक्के दिए, उसके कारण आज मेरे परिवार को खाना मिल सकेगा मजदूर की बातें सुनकर बेटे की आंखें भर आई और उसने अपने पिता से कहा कि सच है लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनन्ददायी होता है।

संदेश: किसी को कोई खुशी देने से बढ़कर और कोई खुशी नहीं होती।

मेहनत की खुशी

ऋषभ माँझी
पुत्र-सत्येन्द्र माँझी
लेखाकार

एक बार एक राजा ने अपनी एक तिजोरी की नीलामी की। राज्य को एक बड़े व्यापारी ने सोने की पाँच सौ मुहरे देकर तिजोरी खरीद ली। अगले दिन दरबार में वह व्यापारी फिर से आया और तिजोरी लौटाने की बात कही। यह सुनकर सब चौंक गए कि कल तो उसने सबसे ऊंची बोली लगाकर तिजोरी खरीदी थी। और आज उसे पैसे वापस लिए बिना लौटाने आया है। मैंने कहा कि उसने खाली तिजोरी का सौदा किया था। लेकिन यह तिजोरी कीमती जेवरों से भरी हुई थी। इस पर राजा सहित सभी दरबारी हंसने लगे और उसे मूर्ख कहने लगे। राजा ने उसे भरी तिजोरी वापस ले जाने का आदेश दिया लेकिन व्यापारी ने कहा कि किस्मत से मिले इन जेवरों को नहीं रख सकता क्योंकि खुशी हमेशा मेहनत की कमाई से ही मिलती है।

संदेश:अगर सच्ची खुशी चाहते हो तो मेहनत करें और इमानदार रहे।

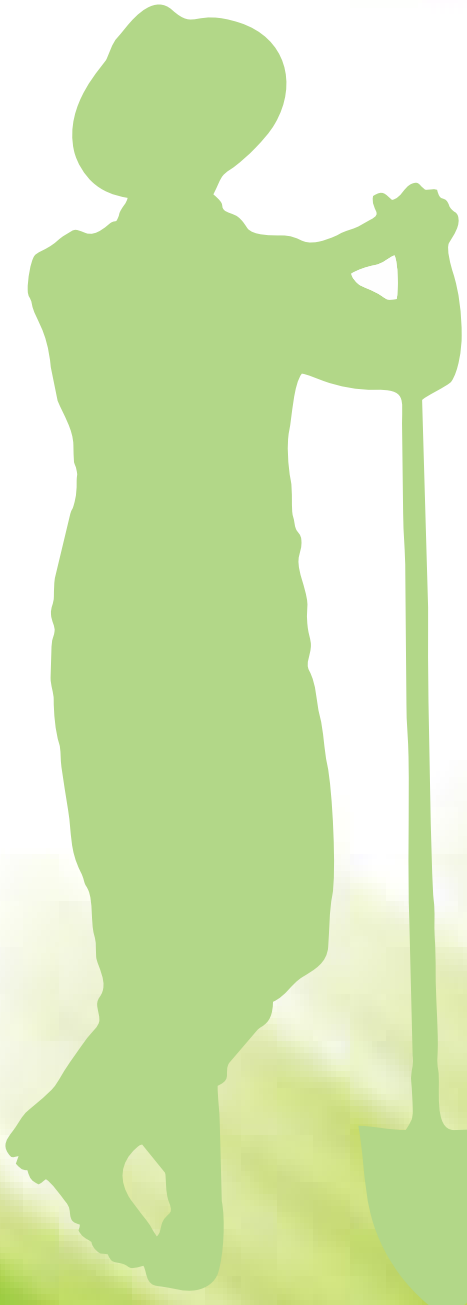

गुहारः एक लड़की की

अर्चना
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

इस जहां में आने से ।
वो इस कदर कतराती है ।।

देख यहां बेटियों की दिन दशा ।
ईश्वर से गुहार लगाती है ।।

मत भेजो मुझको माँ की कोख में ।
मेरे वजूद से वो घबराएगी ।।

नौ महीने बचकर मुझे बचाएगी ।
फिर मैं अस्तित्व को पाउंगी ।।

उसकी गोद में आउंगी ।
जहरीली निगाहें उसे डस जाएंगी ।।

बेटे की चाहत में फैली बांहे मुझको ठुकराएंगी ।
उत्सव मातम बन जाएगा ।।

माँ उस क्षण को कोस जाएगी ।
बेशक ममता वश लाड जताएगी ।।

जी भर दुआएं दे बेसुध मेरी बालाएं लेगी ।
लहंगा, चुंदरी, पायल, बिंदिया से मुझे सजाएगी ।।

चूमकर मेरे माथे को अनगिनत सपने संजोएगी ।
सपनों से जब वो बाहर आएगी ।।

आंगन,स्कूल, दफ्तर, सड़क, ससुराल ।
की चिंता उसे खाए जाएगी ।।

खुद पर बीती हर ऊँच-नीच जेहन में आएंगी ।
कठोरताएं जो सही उसने ।।

मुझे उन सब से बचाने को पूरा जोड़ लगाएगी ।
अकेली हर मोर्चे पे डट जाएगी ।।

साया मेरा वो कहाँ-कहाँ बन पाएगी ।
पग-पग डग-मग होंगे हौसलें जब ।।

सामाजिक कुचलनें मुझसे टकराएंगी ।
भेद-भाव की बेड़ियों में जब जकड़ी जाउंगी ।।

फिक्रों की मैं केंद्र आत्म-विश्वास से बिछड़ती जाउंगी ।
मर्यादाओं का अकेले बोझ लिए खुद पे बोझ बन जाउंगी ।।

अपने हिस्से के मान को आशा के नित नए दीप जलाउंगी ।
इंसानों की बस्ती में पशु-तुल्य मोली जाउंगी ।।

दहेज की भेंट चढ़ माँ-बाप के अश्रु संग बह जाउंगी।
दूर यूं ही चलते मैं भी थक जाउंगी ।।

माँ की भांति उस दिन बेटियों से घबराउंगी ।
गिद्धों की बस्ती में अकेले रहना होगा ।।

उसके आंचल से परे वजूद को लड़ना होगा ।
पत्थर के लोग जहां देवी प्रतिमा को पुष्प चढ़ाते हैं।।

सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, काली की ढोंग दिखाते हैं ।
स्त्री के हर रूप को हकीकत में कुचल इतराते है।।

ये करुण दृश्य न देखा जाएगा ।
उस वक्त वहां होकर मन पछताएगा।।

जिसे दर्द का भान नहीं न खुद की जान ही।
उसकी जान की परवाह करेंगे।।

कन्या भूण हत्या पर कड़े कानून बनाएंगे।
जब हजार मौतें मर जाउंगी पल में।।

मुझे राजनीति को बली चढ़ाएंगे।
आज अगर जीवन को गले लगाउंगी ।।

कल बेमौत मारी जाउंगी।
जब भेड़ियों के झुंड में घिर जाउंगी ।।

पिता, भाई, सगे-संबंधी से दिखने वाले ।
हैवानों से भिड़ जाउंगी ।।

अकेली कब तक इतनों से लड़ पाउंगी ।
लड़-लड़ कर जो हारूँगी ।।

नैनों से नीड़ ढारूंगी
राह में आते-जाते इंसानों को पुकारूंगी।।

पर ये द्रौपदी का द्वापर युग नहीं ।
भगवान कृष्ण दिखते अब कहाँ कहीं ।।

कदमों की आहट भी थम जाएगी ।
तन, मन और नयन पर निराशा हक जताएगी।।

एक खरोच से जो कराह जाती थी ।
सैकड़ों जख्म उसपर सितम ढाएंगी।।

जो ये सीता वाला सतयुग होता ।
मन का विश्वास यूं न रोता ।।

अब कहाँ अग्नि देवता रक्षा करने आएंगे।
कहाँ धरती माँ साथ लेकर जाएंगी।।

गुनाहगारों की इस कतार में ये चंद लोग नहीं।
जिसने माँ, बहन, बीवी, बेटी, बहु की कद्र न की।।

हर उस सख्स को मैं इसी भीड़ में देख रही।
बेशक मेरी हालत पे ये कुछ पल अफसोस जताएंगे।।

नारी को उसके हिस्से का सम्मान कहाँ दे पाएंगे।
ऐसा करके अभिमान में कमी जो पाएंगे।।

छुआ-छूत से इस रोग को पीढ़ी दर पीढ़ी फैलाएंगे।

माँ सीता ने कहा था तभी।।

ये दुनियाँ स्त्रियों के योग्य नहीं।
कुछ नहीं कर सकते तो बस यही एहसान कर दें।।

कन्या भ्रूण हत्या पर बड़ा इनाम ही जड़ दें ।
कुप्रस्थाई क्रूरताओं के दम्भ जो यूं नहीं झेलती।।
हर चार कदम पर आज एक निर्भया न होती।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है ।

सुमित्रानंदन पंत

चिट्ठीः माता-पिता की

अर्चना
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

मांगी थी कितनी मन्नतें
पाली दिल में लाख हसरतें
दुनियाँ जिसकी तुझमें सिमटी
लिखी उन्होंने तेरे नाम ये चिट्ठी
विह्वल स्नेह सागर में
अपनत्व के उस गागर में
आए थे जब बांधे मुट्ठी ।

अजनबी संसार में
रिश्तों के बाजार में
निश्छल चक्षु जब खोला था
अंजान बेजुबान मुख से कहाँ- कहाँ बोला था
दो-दो हुई चार वो बाहें
प्रेमपुरित एक टोला था।

दिल में बस उम्मीद लिए
क्षण-क्षण तेरी दीद लिए
एक तेरी मुस्कान पे
दिलो-जान वार के
हर पल प्रयास ये किया
बस चाहत दिल ने किया
क्या-क्या करें हम तेरी खातिर
ऐ कलेजे के टुकड़े कहो
क्या यत्न करें-प्रयत्न करें
कि लाल मेरे तुम खुश रहो।

तेज तपिश खुद झेलकर
तुझको शीतल छाँव दिया
मुख तेरा तनिक मलिन न हो
भले खुद पर अनगिनत घाव लिया।

तुच्छ चांदी और सोना
आना-जाना, पाना-खोना
ऐसी बातों से विचलित न होना
इनका तुझपर असड़ न हो
चुकाओगे मेरा तुमपर ये कर्ज कहो
इससे बड़ा तेरा कोई फर्ज न हो
ये लालच हमारी पूरी करना
बस लाल मेरे तू खुश रहना
सुन लाल मेरे तू खुश रहना।

सिलसिला ये सदियों का
संदेश यही पीढ़ियों का
यूँ ही बात-बात पर
हर वक्त अपनी जुबान पर वो
यही मंत्र लिए फिरते रहे
खुश रहो, खूब-खुश रहो
तेरी झोली में खुशियां
वो भरते रहे।

छुट गया जो बचपन

रंजीत कुमार
डी. ई. ओ.

वे खो गया जो बचपन,
काश फिर लौट आए तो ।
कुछ अनछुए पल फिर से जी लूं
जो कुछ देर अगर थम जाए तो ।

वह सादगी, वह नादानी,
जो फिर एक बार लौट आए तो।
मासूमियत इन आंखों में,
एक बार फिर बचपन दस्तक दी जाए तो।

जो गुम गया बचपन,
काश! फिर लौट आए तो।
परियों की कहानी,
वो कागज की कश्ती,
कीचड़ में गिरकर भी करते थे मस्ती।

वह धुंधली जो यादें हैं,
आज फिर सच बन जाए तो ।
भविष्य की चिंता एक बार फिर,
जो ना सताए तो।

वह छूट गया जो बचपन ,
काश फिर लौट आए तो।
कुछ पल बड़े ना बनकर,
छोटे से ही रह जाए तो।

छुप गई जो मुस्कुराहट,
वो फिर खिलखिलाए तो।
एक बार फिर खुशी,
चंचल आंखों से छलक जाए तो।

ना खुद से शिकायतें हो,
ना जिंदगी से नाराजगी हो।
वो खो गया जो बचपन,
काश फिर लौट आए तो।

हाय ! रे "जियो"

रंजीत कुमार
डी. ई. ओ.

हाय रे! "जियो"
यह क्या कियो
जब खेल के महाकुंभ में
डूबा था पूरा रियो
उस समय हमारे देश में
सब ढूंढ रहे थे जियो।
हमारे देश की बेटियां
जब खेल रहे थे रियो में
तब हमारे देश के बेटे
डूबे हुए थे जिओ में
मुफ्त डेटा पाने का
सब को चढ़ा बुखार
काम-काज सब छोड़ के
करने लगे जुगाड़
नेट की दीवानगी सब पे
कुछ इस कदर है सवार
निगाहे रहती है फोन में तब भी
जब करते हैं सड़क पार।
जियो ने भारतवासी को
डेटा का लड्डू खिला दिया
बाकी टेलीकॉम कंपनी को
जड़ से पूरा हिला दिया
सस्ते प्लान लाकर
हर ग्राहकों को लुभा लिया
जो नहीं कर सका कोई
अंबानी ने करके दिखा दिया।
जिओ के आगे भी
अभी बहुत है कहानी
काम करो कुछ ऐसा कि
तुम भी बन जाओ अंबानी।

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है ।

डॉ संपूर्णानंदन

भविष्य की कल्पना

रंजीत कुमार
डी. ई. ओ.

दाने गिन कर दाल मिलेगी,
गेहूं की बस चाल मिलेगी।
पानी के इंजेक्शन होंगे,
घोषित रोज इलेक्शन होंगे।
हलवाई हैरान मिलेंगे,
बिन चीनी मिष्ठान मिलेंगे।
जलने वाला खेत मिलेगा
बस मिट्टी का तेल मिलेगा।
शीशे में पेट्रोल मिलेगा
आने वाले पीढ़ी को
गहरा एक षड्यंत्र मिलेगा।
ना सुभाष, ना गांधी होंगे।
खादी में अपराधी होंगे।
जनता गूंगी बहरी होगी।
बेबस न्याय कचहरी होगी
यासों की भी रैली होगी।
गंगा बिल्कुल मैली होगी
घर-घर में फैक्स मिलेंगे
सांसो पर भी टैक्स लगेंगे।
नित नूतन पीढ़ी को
राजनीति का तंत्र मिलेगा।
आने वाली पीढ़ी को,
गहरा एक षड्यंत्र मिलेगा।।

धन और धर्म

चन्द्र किशोर तिवारी
सहायक लेखा अधिकारी

जब भी हम इस जीवन के बारे में गहराई से सोचते हैं तो हमें कुछ समझ में नहीं आता है कि यह जीवन क्या है, इस जीवन की समाप्ति के बाद हम कहाँ जायेंगे, जहां हम जायेंगे वह लोक कैसा होगा, वहाँ हम कैसे रहेंगे, वहाँ कौन-कौन होंगे, वहाँ कबतक रहेंगे, वहाँ के बाद कहाँ जायेंगे, आदि-आदि अनंत प्रश्न मन में उठते है। वैसे इन सब प्रश्नों का उत्तर हमारे धर्म ग्रन्थों में है। लेकिन फिर भी यह सब सोचकर मन विचलित हो उठता है, परंतु एक बात अटल सत्य है कि सभी की मृत्यु सुनिश्चित है। यह भी सत्य है कि इस लोक के अलावा भी एक लोक है जहां हम सबों को जीवन के त्यागने के बाद जाना है।

आज के इस युग में प्रायः सभी लोगों के जीवन का पहला उद्देश्य है धन कमाना और हो भी क्यों ना क्योंकि धन से ही हमारी सभी कामनाओं कि पूर्ति होती है। धन कमाने की आपाधापी में हम धर्म कमाना भूल जाते हैं। धर्म एवं अधर्म की तो बहुत परिभाषाएं है, लेकिन इस कलिकाल में सबसे बड़ा धर्म परोपकार है।

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं ।
परोपकारः पुण्याय ,पापाय परपीडनं॥"

धर्म एवं अधर्म की विभिन्न परिभाषाओं में न उलझकर हमें केवल उक्त श्लोक का जीवन में अनुसरण कर जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए। परोपकार मतलब किसी जरूरतमन्द की मदद करना सबसे बड़ा पुण्य (धर्म) है तथा मन, वचन एवं कर्म से किसी को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप (अधर्म) है। स्वयं का दर्द महसूस होना जीवित होने का प्रमाण है जबकि औरों का दर्द महसूस होना इन्सान होने का प्रमाण है। हम सबों ने यह अनुभव किया है कि जब हम किसी की मदद करते हैं तो एक अद्‌भुत आनंद की अनुभूति होती है और यही अनुभूति हमें निरंतर इस कार्य को करने हेतु प्रेरित करती है। कमाया हुआ धन इस लोक के बैंक में जमा होता है जबकि कमाया हुआ धर्म परलोक के बैंक में जमा होता है। जब हम इस संसार से विदा होंगे तो हमारे साथ लौकिक रूप से कुछ नहीं जाएगा, ऐसा हम सब जानते है, लेकिन अलौकिक रूप से हमारा कमाया हुआ धर्म हमारे साथ जाएगा और यही धर्म हमारी रक्षा करता है।

अब सबसे बड़ा आश्चर्य आज भी वही है जो महाभारत काल में यक्ष के प्रश्न के उत्तर में युधिष्ठिर महाराज द्वारा दिया गया जवाब था कि हर रोज हमारी आँखों के सामने न जाने कितने लोग मृत्यु के मुख में समा जाते हैं फिर भी हममे से बचे हुए लोग यही कामना करते हैं कि हम अमर रहें, अपनी मृत्यु के बारे में वो कभी सोचते ही नहीं। हमलोग

कब काल के मुख में समा जायेंगे ये कोई नहीं जानपाता।

"सजधज कर जिस दिन मौत की शहजादी आएगी
न सोना काम आएगी, न चाँदी आएगी"

अत: इसे स्मरण रखते हुए हमे धन के साथ-साथ धर्म भी कमाने पर ध्यान देना चाहिए। धन इहलोक (अस्थाई घर) में चलने वाली मुद्रा है जबकि धर्म परलोक (स्थायी घर) में चलने वाली मुद्रा है।

अंत में, मैं यही निवेदन करना चाहूँगा कि इस आर्थिक युग में हम धन कमाने कि होड़ में धर्म की कमाई पर भी ध्यान दें। कुछ वहाँ के लिए भी कमाइए जहाँ अंत में जाना है। वैसे हम सभी लेखाकार हैं, अत: अपने कर्मों के लेखा की त्रुटि पर स्वयं चिंतन करते हुए इसमें सुधार का प्रयास करते रहना चाहिए ।

"गठड़ी बाँध बैठा है अनाड़ी।
पर जो साथ ले जाना था, वो कमाया ही नहीं॥"

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी ।

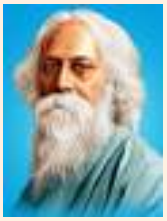

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

योग्यता की पहचान

धीरज कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

किसी जंगल में एक बहुत बड़ा तालाब था। तालाब के पास एक बगीचा था, जिसमे अनेक प्रकार के पेड़ -पौधे लगे थे। दूर- दूर से लोग वहाँ आते और बगीचे की तारीफ करते।

गुलाब के पेड़ में लगा पत्ता हर रोज लोगों को आते-जाते और फूलों की तारीफ करते देखता, उसे लगता की हो सकता है एक दिन कोई उसकी भी तारीफ करे। पर जब काफी दिन बीत जाने के बाद भी किसी ने उसकी तारीफ नहीं की तो वो काफी हीन महसूस करने लगा। उसके अन्दर तरह-तरह के विचार आने लगे" सभी लोग गुलाब और अन्य फूलों की तारीफ करते नहीं थकते पर मुझे कोई देखता तक नहीं, शायद मेरा जीवन किसी काम का नहीं ''कहाँ ये खूबसूरत फूल और कहाँ मैं" और ऐसे विचार सोच कर वो पत्ता काफी उदास रहने लगा।

दिन यूँही बीत रहे थे कि एक दिन जंगल में बड़ी जोर-जोर से हवा चलने लगी और देखते-देखते उसने आंधी का रूप ले लिया। बगीचे के पेड़-पौधे तहस-नहस होने लगे , देखते-देखते सभी फूल जमीन पर गिर कर निढाल हो गए। पत्ता भी अपनी शाखा से अलग हो गया और उड़ते-उड़ते तालाब में जा गिरा। पत्ते ने देखा कि उससे कुछ ही दूर पर कहीं से एक चींटी हवा के झोंको की वजह से तालाब में आ गिरी थी और अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रही थी।

चींटी प्रयास करते-करते काफी थक चुकी थी और उसे अपनी मृत्यु तय लग रही थी कि तभी पत्ते ने उसे आवाज दी, " घबराओ नहीं, आओ , मैं तुम्हारी मदद कर देता हूँ।",और ऐसा कहते हुए अपनी उपर बैठा लिया. आंधी रुकते-रुकते पत्ता तालाब के एक छोर पर पहुँच गया; चींटी किनारे पर पहुँच कर बहुत खुश हो गयी और बोली, ''आपने आज मेरी जान बचा कर बहुत बड़ा उपकार किया है , सचमुच आप महान हैं, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!'' यह सुनकर पत्ता भावुक हो गया और बोला," धन्यवाद तो मुझे करना चाहिए, क्योंकि तुम्हारी वजह से आज पहली बार मेरा सामना मेरी काबिलियत से हुआ , जिससे मैं आज तक अनजान था। आज पहली बार मैंने अपने जीवन के मकसद और अपनी ताकत को पहचान पाया हूँ। '

मित्रों , ईश्वर ने हम सभी को अनोखी शक्तियां दी हैं ; कई बार हम खुद अपनी काबिलियत से अनजान होते हैं और समय आने पर हमें इसका पता चलता है, हमें इस बात को समझना चाहिए कि किसी एक काम में असफल होने का मतलब हमेशा के लिए अयोग्य होना नही है। खुद की काबिलियत को पहचान कर आप वह काम कर सकते हैं, जो आज तक किसी ने नही किया है।

मन की शांति अनमोल है

धीरज कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

मन की शांति किसी भी मनुष्य के लिए एक अनमोल धन है। इसके बिना जीवन में सब कुछ बेकार है। अगर आपके मन में शांति नहीं होगी तो आप इस दुनिया की किसी भी चीज से प्रसन्न और आनंदित नहीं हो सकते भले ही आपके पास कितना भी धन क्यों ना हो। वहीँ अगर आपके पास मन की शांति है तो आप झोंपड़ी में भी प्रसन्नता के साथ रह सकते हैं। मन की शांति एक ऐसा अनमोल धन है जिसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए और हमेशा इस मूल्यवान धन की रक्षा करना चाहिए. क्योंकि एक बार आपका रुपया–पैसा चला गया तो उतना नुक्सान नहीं होगा जितना की मन की शांति के चले जाने से होगा। यह एक ऐसा खजाना है जो आपको बड़ा भाग्यवान और ताकतवर बना देता है।

सच है कि पैसों से बहुत कुछ खरीदा जा सकता है लेकिन संतोष और मन की शांति को पैसों से नहीं खरीद सकते. यह एक ऐसी चीज है जो हमें अपने अन्दर विकसित और धारण करनी होती है। आज दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं जिनके पास अथाह संपत्ति है, पर फिर भी वे खुद को कंगाल समझते हैं क्योंकि उनके पास मन की शांति नहीं है।

सफलता प्राप्त करने के लिए मन की शांति होना बहुत जरूरी है। एक अशांत और चिंतित मन से आप किसी बढ़िया परिणाम की उम्मीद नहीं कर सकते. अशांत मन किसी भी काम पर पूरा फोकस ठीक से नहीं कर पाता जिससे कोई भी कार्य अपने सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता। एक stressful और happy दोनों तरह के mind की स्थिति में किए गए कामों का अवलोकन करके देखिए। जो काम एक happy mood से पूरी शांति के साथ किया जाता है उसकी quality ही कुछ अलग होती है।

पैसा कमाना बहुत जरूरी है लेकिन कुछ लोग पैसा कमाने की दौड़ में इस तरह से लग जाते हैं कि वो अपनी life की दूसरी चीजों को खतरनाक तरीके से ignore करने लगते हैं।

कुछ समय बाद एक ऐसा समय आता है कि सपमि में दूसरी जरूरी चीजें उनके हाथ से निकलने लगती हैं जिसे health, family life, मन की शांति और happiness. पैसा कमाना भी जरूरी है और अपने जीवन की दूसरी आवश्यक बातों पर ध्यान देना भी जरूरी है। इसलिए ध्यान रखें कि रुपया पैसा कमाने की भागदौड में जिंदगी की अन्य जरूरी जिम्मेदारियां और मन की शांति पीछे न छूटने पाए।

किसी ने सच ही कहा है–

शांति का कोई मार्ग नहीँ हैं, बल्कि शांति खुद ही एक मार्ग हैं।

शांति की शुरुआत मुस्कराहट के साथ होती है। सुख प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग मन की शांति है. मन की शांति आपके मन से ही शुरू होती है और मन पर ही खत्म होती है. अगर आपकी लाइफ में शांति है तो आप संसार के सबसे सुखी व्यक्ति हैं।

जीवन के प्रति सकारात्मकता और मन की शांति का आपस में गहरा संबंध है। एक सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी मुसीबतों को भी आसानी से पार कर जाता है. मन को शांति रखने की कला आती है वो सच्चे अर्थों में एक बहुत ही चतुर इन्सान है। ऐसा व्यक्ति हरदम खुश रहता है और नकारात्मकता उसके पास भी नहीं फटकती. अगर आप positive thinking और peace of mind दोनों को maintain कर सकते हैं तो आप अपनी सपमि में खुश रहना सीख सकते हैं। अगर आप सोचते हैं कि आप हर समय परेशान नहीं रहें तो आपको खुद को शांत रखने की कला सीखनी होगी।

एक शांत और प्रसन्न चित्त मष्तिष्क बड़ी से बड़ी समस्या को भी आसानी से solve कर लेता है. Fresh mind में ही हम सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं. इसलिए मन की शांति के महत्व को समझना बहुत जरूरी है।

जिंदगी की महत्वपूर्ण दौलतों में से एक है मन की शांति. इस दौलत के बिना आप अमीर नहीं कहला सकते क्योंकि ऐसी अमीरी किस काम की जहाँ उसे पाकर भी खुशी नहीं हो. शांति एक ऐसी चीज है जो किसी भी उपलब्धि पर मन को सुकून देती है। अशांत मन हमेशा कुछ न कुछ उधेड़बुन में ही लगा रहता है और जिंदगी के सुख-ऐश्वर्य को भोगने के आत्मिक सुख से वंचित रहता है। सुख को महसूस करने के लिए मन में शांति भी तो जरूरी है. अगर आप एक सच्चे दौलतमंद इंसान बनना चाहते हैं तो मन की शांति बनाये रखने के बारे में भी सोचिये। इस बात का प्रयास कीजिये कि आप कैसे खुद को अक्सर positive रख सकते हैं।

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है ।

मौलाना हसरत मोहानी

संघर्ष विराम हेतु अपील

श्रीमती आभा झा
द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर
सहायक लेखा अधिकारी

है मचा अजब कोहराम कोई रोको रे!
मानवता हुई नीलाम कोई रोको रे!!
संगर सामर्थ्य प्रदर्शन का
भुजबल से प्रतिभट मर्दन का
युद्धक विमान की भीषणता
यह असहनीय आक्रमकता

हो रहा घोर संग्राम कोई रोको रे!
मानवता हुई नीलाम कोई रोको रे.!!

उन भीम-भयंकर तोपों से
बच सकता कौन प्रकोपों से
घर, महल, अटारी ध्वस्त हुए
दिन रहते दिनकर अस्त हुए

विध्वंस हुए धन-धाम कोई रोको रे !
मानवता हुई नीलाम कोई रोको रे!!

सुन गौरव गर्जन तड़ तड़ तड़
मचती रहती पल पल भगदड़
बारूद लिपटे उत्तान गिरे
लोहू लथपथ म्रियमाण गिरे

शब पड़े कई गुमनाम कोई रोको रे!
मानवता हुई नीलाम कोई रोको रे!!

घर छोड़ा शिक्षा पाने को
पढ़ लिखकर नाम कमाने को
पर हाय! लाल ना लौटा सका
चढ़ गया भेंट भिषण रण का

माँ का क्रंदन अविराम कोई रोको रे!
मानवता हुई नीलाम कोई रोको रे!!

रौरव- रव अवरोधें कैसे
रोते शिशु को बोधें कैसे
ललकार कहीं, चित्कार कहीं
काकोदर की फुफकार कहीं

फिर लाशें गिरि धड़ाम कोई रोको रे!
मानवता हुई नीलाम कोई रोको रे!!

हरी चूड़ियाँ

पूर्णेन्दु कुमार झा
द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर
सहायक लेखा अधिकारी

शोभा है अनमोल प्रकृति की,
सुन्दर सावन मास!
हरियाली चितवन को भाए,
मस्त-मस्त मनचास!!
मैं साजन की प्यारी सजनी,
खूब नशा है प्यार!
हरित वसन महिकाय सुशोभित,
हरा-भरा संसार!!
प्रियतम का मुखड़ा चंदा सा
जिससे खूब उजास
हिरियाली चितवन रो भाव
मस्त मस्त मनचास
हाथ चूड़ियाँ खूब खनकती,
साजन से उपहार!
साथ जिंदगी संभव जीना,
प्रचुर प्रेम सुखसार!!
सौभाग्य मिरा दो हाथों में,
हरि चूड़ियाँ खास!
हरियाली चितवन को भाए,
मस्त-मस्त मनचास!!
साजन मेरा भोला-भोला,
समझदार इंसान!
ख्याल मिरा रखते हैं ज्यादा,
कह कह मेरी जान!!
नजर बुरी ना होय किसी की,
मैं साजन की खास !
हरियाली चितवन को भाए,
मस्त-मस्त मनचास!!
खूब-खूब रंगों की दुनिया,
रंगरेली कर खूब!
ये हरी चूड़ियाँ कहत खनक,
नहीं प्यार से ऊब!!
"पूर्णेन्दु" करत हरिशरण दुआ,
सलामती सुख आस!
हरियाली चितवन को भाए,
मस्त-मस्त मनचास!!

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है ।

स्वामी दयानंद

अहसास तुम्हारे होने का

पूर्णेन्दु कुमार झा
द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर
सहायक लेखा अधिकारी

खामोश न रातें लगती जी हैं,
दिन मेरा सुख-चैन का !!
अहसास तुम्हारे होने का ,
खूब समा दिन-रैन का !!
सुनता हूँ मैं इक गीत अभी,
मन कितना उस बोल में !!
तस्वीर सुहानी साथ मगज,
बरसा प्यार कलोल में !!
मधुगीत मिलन की वेला का,
प्यारा -सा अहसास है !
बिना ख्याल गया ना व्यर्थ समाँ,
दिल से यारी खास है !!
हमराह बदौलत खूब सफर,
स्नेहपुकार सुनैना का !
अहसास तुम्हारे होने का ,
खूब समाँ दिन- रैन का !!
शब्दों में खूब बखाना तिरा,
धुन में तेरी चाल है !
आकाश अचानक अरु नीला,
देखा बहुत कमाल है !!
रजनी के वसनों में तारे,
उसे चांद से प्यार है !
ज्योतिर्मय पिंडों की दुनिया,
मिला दिव्य संसार है !!
चंदा की इच्छा और प्रबल,
मुझसे रोज उजास हो!
दूरी क्यों साजन-सजनी में,
खोटा ना अहसास हो!!
बारिश में छतरी के नीचे,
मिता संग सुनैना का!
अहसास तुम्हारे होने का ,
खूब समा दिन-रैन का !!
जब नींद न आये रातों में,
निज मन में छवि तोर है !
तेरी सलगी अलग कहाँ तब,
साथ तिरा चितचोर है !!
"पूर्णोन्दु" न है अनजान बना,
ख्वाबमहल इहनैन का !
अहसास तुमारे होने का,
खूब समा दिन- रैन का !!

दर्द

कुमारी संगीता सिन्हा
सहायक पर्यवेक्षक

नकाशा मुन्नी बाई के कत्ल के आरोप में दीपक कुमार को जज मिस्टर भार्गव उम्र कैद की सजा सुनाते हैं। सरकारी वकील सीमा देवी गवाह एवं साक्ष्य के आधार पर दीपक को उम्र कैद की सजा करवाने में कामयाब हो जाती है। सीमा देवी को लगता है कि दीपक बदचलन अय्याशी धोखेबाज किस्म के इंसान हैं इसे समाज में रहने का कोई हक नहीं है इसकी जगह जेल में ही ठीक है। दीपक को जब उम्र कैद की सजा हो जाती है तब सीमा देवी चैन की सांस लेती है। सीमा देवी 4 वर्ष पूर्व दीपक से बहुत प्यार करती थी और उसी से शादी करना चाहती थी। दीपक भी सीमा से बेइंतहा प्यार करता था। दीपक एम. ए. एवं एलएलबी की डिग्री लिए हुए था उसकी एक बहन सुषमा थी जो उससे उम्र में छोटी थी। सुषमा की मंगनी अजीत से दीपक के माता-पिता कर दिए थे। सुषमा की मंगनी होने के बाद एक दिन रोड दुर्घटना में उनके माता पिता की मृत्यु हो जाती है। 1 दिन की बात है बारिश में सीमा जंगल में भीगते हुए बारिश की आनंद ले रही थी तभी दीपक आ जाता है।

सीमा की सुंदरता को देखकर दीपक उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है सीमा भी दीपक को चाहने लगती है। एक दिन दीपावली में लक्ष्मी पूजा करने के लिए सीमा दीपक के यहां जाती है और वही सीमा सुषमा एवं दीपक पूजा करते हैं। पूजा के बाद सीमा दीपक को लेकर अपने घर लाती है जहां दीपक सीमा के पिता जी सेठ मंगलदास से मिलता है परंतु सेठ जी को दीपक जैसे साधारण लड़के से सीमा का प्यार करना ना गवार गुजरता है परंतु उस वक्त सेठ जी कुछ नहीं बोलते हैं। दीपक सेठ जी के व्यवहार से समझ जाता है कि वह उसे पसंद नहीं करते हैं। और यह बात व सीमा को बताता है सीमा कहती है शादी तुमसे मुझे करनी है पिताजी को नहीं। सेठ जी एक योजना बनाते हैं जिसमें एलएलबी की पढ़ाई पूरा करने सीमा को अमेरिका भेजना चाहते हैं परंतु उन्हें पता है कि सीमा उनकी यह बात नहीं मानेगी इसलिए वह दीपक के घर जाते हैं और कहते हैं कि मैं चाहता हूं कि तुम सीमा को एलएलबी की पढ़ाई पूरा कराने के लिए अमेरिका जाने के लिए दबाव डालो। दीपक सेठ जी की बात मानकर सीमा को अमेरिका भेजने में कामयाब हो जाता है।

इधर सेठ जी दीपक के होने वाले बहनोई अजीत के माध्यम से दीपक के घर में चरस रखवाने में कामयाब हो जाते हैं। सेठ जी दीपक को अपने नजरों से गिराने के लिए पुलिस को दीपक के घर जांच पड़ताल करने एवं गिरफ्तार करने के लिए भेज देते हैं। पुलिस जांच पड़ताल करती है तो दीपक के एक किताब से चरस एवं गांजा बरामद कर उसे गिरफ्तार कर थाने ले आती है जहां रात भर दीपक को थाना में कैदियों के बीच रहना पड़ जाता है । सुबह से ही जमानत करवा कर अपनी वाहवाही बटोरने के लिए थाने से छुड़वाने के लिए दीपक के पास जाते हैं। दीपक छूट जाता है सेतु जी दीपक के होने वाले बहनोई अजीत को दीपक के झूठे केस में फंसाने के लिए 50 हजार की राशि इनाम के

तौर पर देते हैं और कहते हैं कि तुम सुषमा से शादी कर लो और विदाई के समय दीपक से ₹50 हजार मांग करना अजीत सेठ जी की बात मान लेता है। सुषमा एवं अजीत की शादी तय तारीख को हो जाती है परंतु विदाई के समय अजीत दीपक को घर में अकेले में ले जाता है और कहता है कि जब तक तुम ₹50000 नगद नहीं दोगे तुम्हारी बहन को लेकर नहीं जाऊंगा तुम अपनी बहन को अपने ही घर में रखो दीपक बहुत अजीत के सामने गिर जाता है परंतु अजीत पर कोई असर नहीं पड़ता है इतने में ही सेठ जी आ जाते हैं और कहते हैं कि तुम यदि मेरी शर्त मान लो दीपक तब मैं तुम्हें 50000 नगद दे दूंगा दीपक अनजाने में सेठ जी की शर्ट मान लेता है सेठ जी कहते हैं कि तुम मेरी बेटी सीमा को भूल जाओ और तुम दूसरी लड़की से शादी कर लो परंतु वह मानने के लिए तैयार नहीं होता है।

तब सेठ जी दीपक को बहन की वास्ता देते हैं कि तुम यदि मेरी बात नहीं मानोगे तब तुम्हारी बहन सुषमा अपना ससुराल कभी नहीं जा पाएगी। दीपक सुषमा के खातिर सेठ जी की शर्त मानकर दूसरी लड़की से शादी कर लेता है। सुषमा का पति एक नंबर का अय्याशी एवं शराबी है वह प्रत्येक दिन मुन्नी बाई के कोठे पर उसका नृत्य देखने जाता है एक दिन मुन्नीबाई को देखकर अजीत की नियत बदल जाती है और वह उसके साथ बदतमीजी करने लगता है कि उसके हाथ से चाकू मुन्नी बाई के पेट में घुस जाता है जिसके कारण घटनास्थल पर ही मुन्नी बाई की मौत हो जाती है घटनास्थल पर सुषमा एवं दीपक भी पहुंच जाता है दीपक सुषमा को कहता है कि यह जुर्म मैं अपने सिर पर ले लेता है और तुम्हारा पति पर कोई आरोप नहीं आएगा तुम मेरा बेटा विक्की जो एक वर्ष का है उसका ख्याल रखना सुषमा बहुत रोती है परंतु अपने भैया की बात मानकर अजीत और विक्की को लेकर घर चली आती है दीपक जेल चला जाता है।

अनजाने में ही सीमा दीपक के विरुद्ध सरकारी वकील बनकर दीपक को उम्र कैद की सजा दिलवाती है दीपक सजा होने के बाद जब अदालत से जेल जाता है। तो जेलर दुर्गादास से कहता है कि मैं एक बार सीमा से मिलना चाहता हूं आप मेरा संवाद किसी भी तरह सीमा तक पहुंचा दीजिए जब सीमा जेलर की बात सुनती है तो दीपक से मिलने से इंकार कर देती है परंतु जेलर दुर्गादास के समझाने पर वह किसी तरह दीपक से मिलने के लिए राजी हो जाती है सीमा जेल में दीपक से मिलती है और कहती है कि बोलो अब तुम्हें धोखा देने के बाद क्या कहना है दीपक करता है कि मुझे अपनी सफाई में कुछ नहीं कहना है मुझे इस बात की खुशी है कि मुझे सजा तुम दिलवाई हो अब मैं चैन से मर तो सकता हूं, परंतु मरने से पहले तुम अपने पिताजी को मुझ पर ढाए गए जून को अच्छी तरह से जान लो ताकि मेरे बारे में सच्चाई समझ सको सीमा को अपने पिता की करतूत पर बहुत घृणा होती है और उसे गर्व होता है कि वह दीपक से प्यार की दीपक सीमा को कहता है कि मेरा एक साल का बेटा है विक्की मैं चाहता हूं कि उसकी देखभाल तुम करोगी सीमा यह तोहफा समझकर कुमारी मां बनने के लिए तैयार हो जाती है विक्की की अच्छी तरह से देखभाल करती है।

अच्छा शिक्षा देती है और वकील की पढ़ाई पूरा करने के लिए अमेरिका भेज देती है दीपक का सजा पूरा होने से पहले भी सीमा बीच में उससे मिलने जाया करती है। सजा पूरा होने पर वक्त आ जाता है तब सीमा जेल जाकर दीपक को बताती है कि कल तुम जेल से छूटोगे और उधर विक्की की वकालत की पढ़ाई पूरा करके कल ही भारत वापस आ रहा है। यह सुनकर दीपक खुश हो जाता है सीमा कहती है कि तुम जेल से छूटने के बाद स्टेशन चलना जहां तुम दूर से ही विक्की को देख लेना विक्की अपनी दोस्त पूनम जो जज भार्गव की बेटी है के साथ स्टेशन पहुंचता है जहां सीमा विक्की को रिसीव करती है दीपक दूर से ही विक्की कि देखकर बहुत खुश हो जाता है कि उसका बेटा

वकील बन गया है। विक्की बचपन से ही सीमा को मां कह कर बुलाता था ।

क्योंकि वह जानता है कि उसकी मां सीमा देवी ही है जेल से छूटने के बाद दीपक के पास रहने के लिए कोई स्थाई जगह नहीं रहता है जेलर के कहने पर जज साहब अपने घर में दीपक को माली के तौर पर रख लेते हैं क्योंकि जज साहब जानते हैं कि दीपक जेल में बहुत अच्छा मालिक का काम करता था साथ ही वह नेक दिल का इंसान भी है, विक्की जज साहब के यहां जूनियर वकील के रूप में रहकर काम सीखता है प्रत्येक दिन अदालत जाता है और अदालत में जो केस की पैरवी करता है। वह केस विक्की ही जितता है। यह सब बतौर माली दीपक देखता है और उसे प्रत्येक दिन अदालत जाने से पहले गुलदस्ता भेंट करता है। एक दिन विक्की गाड़ी से घर जा रहा था कि रास्ते में अजीत विक्की का फूफा की नजर उस पर पड़ जाता है वह विक्की पीछा करते-करते उसका घर आ जाता है जहां नजर सीमा पर पड़ जाती है वह खुश हो जाता है कि सीमा को ब्लैकमेल करने का अच्छा मौका है सीमा का नजर जैसे अजीत पर पड़ता है वह गुस्सा हो जाती है और कहती है कि तुम यहां क्यों आए हो दोनों के बीच नोक-झोंक होने लगती है तब अजीत सीमा देवी को कहता है। कि वह सब कुछ विक्की को बता देगा कि उसका पिता दीपक है जो अभी तुम्हारे ही घर में माली का काम करता है वह जेल से सजा भुगतने के बाद बाहर निकला है।

सीमा देवी अजीत का मुंह बंद करने के लिए मुंह मांगी रकम देती है और कहती है कि अब तुम अपना मुंह बंद रखना अजीत रुपया लेकर जाने के क्रम में रास्ते में कई बोतल शराब खरीदता है और नशे में घर पहुंचता है सुषमा अजीत को देखती है तो आग बबूला हो जाती है और कहती है कि इतना रुपया कहां से लाए हो वह सब कुछ सही सही बता देता है कि यह रुपया वह सीमा देवी के यहां से लाया है सुषमा खूब अजीत को खरी-खोटी सुनाती है कि तुम्हारी करतूत की सजा में भैया अपनी जवानी का 14 साल जेल में काट कर अपनी जिंदगी बर्बाद कर चुके हैं इतना पर भी तुम्हें संतुष्टि नहीं हुआ है तो अब तुम सीमा भाभी और विक्की की जिंदगी को तबाह करने पर तुले हुए हो इसी बात को लेकर दोनों पति-पत्नी के बीच नोकझोंक होती है अजीत जबरदस्ती जहर अपनी पत्नी को पिला देता है सुषमा भागते भागते दीपक के पास पहुंच जाती है दीपक की नजर जैसे सुषमा पर पड़ता है वह खुश हो जाता है दीपक पहले भी सीमा से सुषमा के बारे में पूछा करता था कि मेरी बहन पर तुम्हारी नजर कभी पड़ी है कि नहीं सीमा बताती है कि वह सुषमा को कहीं नहीं देखी है सुषमा अजीत को सारा करतूत बता देती है और वह वहां उसी जगह गिर जाती है जिससे उसकी मौत हो जाती है।

इसी बीच अजीत सुष्मा को खोजते-खोजते कोचिंग की जगह पहुंच जाता है दीपक और अजीत के बीच हाथापाई होने लगता है इसी बीच अजीत का सिर दिवार पर पटका जाता है जिससे घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो जाती है अजीत को हत्या का आरोप दीपक पर लगता है और वह एक बार फिर से जेल पहुंच जाता है दीपक के केस की पैरवी सीमा देवी करती है जो नामी वकील है सरकारी वकील विक्की रहता है। विक्की दिपक से खफा रहता है कि वह अजीत की हत्या की है इसीलिए वह एक दिन अपनी मां सीमा देवी को कहती है कि मां आप ये केस छोड़ दीजिए आप क्यों एक हत्यारा की मदद करना चाहते हो और अपना बेटा को हराना चाहते हो आप के रहते मैं यह केस नहीं जीत सकता हूं।

सीमा जब दीपक से मिलने जेल जाती है तो दीपक भी कहता है कि सीमा तुम यह केस छोड़ दो तुम्हारे रहते मेरा बेटा केस नहीं जीत सकता है विक्की जब केस जीत जाएगा तो मैं खुशी-खुशी फांसी पर चढ़ जाऊंगा सीमा दीपक को बहुत डांटती और कहती है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी बहन सुषमा है बेटा विक्की है और मैं तो पूछ रहा हूं ही नहीं

तुम यह कभी सोचा कि तुम्हें कुछ हो जाएगा तो मेरा क्या होगा मैं अपना जीवन में जो खुशी-खुशी तुम्हारे नाम कर दी मुझे क्या मिला मैं केस नहीं छोडुँगी और अब कोई मुझे तुमसे अलग नहीं करेगा एक दिन सीमा मंदिर से पूजा करके निकल रही थी कि विक्की पहुंच जाता है और कहता है कि मां आशीर्वाद दीजिए कि मैं यह केस जीत जाओ सीमा कहती है इस सच का पता लगाने में भगवान तुम्हारी मदद करें। अदालत में सीमा एवं विक्की अपना-अपना जोरदार पक्ष रखते हैं विक्की जिला दुर्गादास के जरिए पता लगा लेता है कि सीमा देवी जैन में दीपक से बार बार मिले जाया करती थी इस बात पर बहस होती है पर सीमा देवी का इस बात से इस केस में कोई लेना देना नहीं है और मुझे जानबूझकर सरकारी वकील जलील करना चाहते हैं। विक्की कहता है कि सच क्या है आप ही बता दीजिए सीमा देवी मजबूर होकर सच बता देती है कि दीपक विक्की का पिता है इस बात की राज अजीत जानता था। परंतु दीपक नहीं चाहता था कि विक्की को यह बात पता चले कि उसका पिता जेल से सजा काटकर निकला है इसी बात को लेकर दीपक एवं अजीत की हाथापाई हो जाती है जिससे अजीत का सर दिवार से टकराने के कारण घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो जाती है दीपक अजीत की हत्या नहीं किया है। इतना सुनकर विक्की को बहुत अफसोस होता है कि वह कितना बड़ा गलती कर रहा था विक्की को जब अदालत में सच का पता चल जाता है तो, कटघरा में खड़ा दीपक को हार्ट अटैक आ जाता है और वह गिरने ही वाला होता है कि शिवा दीपक को पकड़ लेती है विक्की भी अपने पिता के पास पहुंच जाता है विक्की दीपक को पिताजी-पिताजी कह कर बुलाता है दीपक बहुत खुश हो जाता है और सीमा देवी की हाथ की चूड़ी तोड़कर अपने हाथ में लगे खून से सीमा देवी को मांग भरते ही उसकी मौत हो जाती है। सीमा देवी भी दीपक के कंधे पर ही अपना सर रखकर प्राण त्याग देती है विक्की अफसोस की चादर ओढ़े अपना घर लौट जाता है।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है ।

जस्टिस कृष्णास्वामी अय्यर

राधा जी का प्रेम

विनय कुमार
पर्यवेक्षक

एक बार कृष्ण भगवान अकेले बैठे हुए थे तभी रुकमणी प्रभु को एक गिलास दूध पीने के लिए देती है। दूध ज्यादा गर्म होने कारण भगवान जब दूध पी लेते हैं। उसके बाद उनके मुंह से ही राधे निकलता है रुकमणी प्रभु से पूछती है कि प्रभु मैं भी तो आपसे आभार प्रेम करती हूं तो फिर मेरा नाम नहीं लेकर राधा जी का नाम क्यों लेते हैं मुझ में और राधा जी में क्या अंतर है। मैं राधा जी से मिलना चाहती हूं। प्रभु बोले ठीक है, तो मिल लो रुकमणी जी सुरक्षाकर्मी को लेकर रथ पर सवार होकर राधा जी से मिलने गोकुल चली जाती है। महल जब पहुंचती है तो महल के चारों तरफ सुरक्षाकर्मी को पाती है। महल भव्य बना हुआ है। रुकमणी माल में प्रवेश प्रवेश करना चाहती है। कई सुरक्षाकर्मी ने रोक देता है। रुकमणी जी अपना परिचय देती है, तभी एक दासी पहुंच जाती है जो बला की सुंदर माथे से तेज प्रकाश निकल रहा था रुकमणी जी को लगता हे कि लगता है यही राधा जी है वह पैर छूकर प्रणाम करने के लिए जैसे ही रुकती है, ताकि उन्हें रोक लेती है और कहती है कि मैं राधा जी नहीं हम राधा जी से मिलने के लिए आपको सात बार पार करना होगा।

जैसे-जैसे प्रत्येक द्वार पार करते जाती है देखती है कि सभी द्वार पर एक से बढ़कर एक दासी खड़ी है जो बेहद ही खूबसूरत है। रुकमणी जी असमंजस में पड़ जाती है और सोंचती है कि राधा जी की दासी जब एक से बढ़कर एक हैं तो राधा जी कितनी सुंदर होगी। अंत में राधा जी के द्वार पर रुकमणी जी पहुंचती है। अंदर प्रवेश करती है तो देखती है कि सामने में जो देवी खड़ी है वो स्वर्ग से उतरती हुई पड़ी है जिसके चारों तरफ से तेज प्रकाश निकल रहा है रुकमणी जी समझ जाती है कि लगता है यही राधा रानी है वह जैसे ही राधा जी के पैर छूने के लिए झुकती है। राधा के शरीर में छाले पड़ा हुआ है। रुकमणी जी कहती है कि यह सब कैसे हुआ। राधा जी बताती है कि कल शाम को जब कृष्ण भगवान को दूध पीने के लिए दी थी तो वह दूध गर्म था जिसके कारण मेरे हृदय में छाले पड़ गया मेरे हृदय में प्रभु वास करते हैं। इस कहानी से हमे यह सीख मिल कि दिमाग में तो हर कोई बस जाता है यदि बसाना हो तो किसी के हृदय में जगह बनाओ जैसा राधा-कृष्ण का प्रेम था।

वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है ।

पीर मुहम्मद मूनिस

लीरा

कुमारी संगीता सिन्हा
सहायक पर्यवेक्षक

लीरा बार डांसर है। वह क्लब में डांस कर रही थी। उसका कॉल आता है कॉल रिसीव करने के बाद पता चलता है कि उसकी मां का कॉल है। मां बीमार है और मृत्यु अवस्था के करीब है वह मरने से पहले लीरा को अपने बारे में सब कुछ बताना चाहती है। वह लीरा को बताती है कि वह उसकी वास्तविक मां नहीं है। वह अनाथालय से उसे मिली थी जब वह मात्र 3 वर्ष की थी। वह उसे पालन-पोषण कर बड़ा की है। यह सभी बात लीरा को बताते-बताते उसकी मां की मृत्यु हो जाती है। लीरा बहुत उदास रहती है एक दिन एक अजनबी व्यक्ति जिसका नाम करण है उसे मिलने आता है और वह उसे विश्वास दिलाता है कि उसकी वास्तविक मां को वह चाहे दुनिया के किसी कोने में हो खोज निकालेगा।

परंतु लीरा को विश्वास नहीं होता। वह जानती है कि करण बड़ा बाप का बेटा है वह उसकी मदद नहीं करेगा। परंतु करण उसे विश्वास दिलाता है कि वह हर संभव उसकी मदद करेगा अब बार-बार लीरा से मिलने आता है और उसकी मां के बारे में कुछ-कुछ बताता है लीरा बहुत ही खूबसूरत लड़की है, जो कोई भी उसे एक बार देख लेता है उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है दुनिया की बुरी नजरों से बचने के लिए करण से दोस्ती के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। करण की दोस्ती स्वीकार कर लेती है। करण पहले से जानता था कि उसके पिता के दोस्त कैलाश प्रसाद के होटल में बार डांसर के रूप में काम करती थी करण के पिता मिस्टर मल्होत्रा को जब लीला और उसके बेटे के दोस्ती का पता चलता है तो मिस्टर मल्होत्रा को यह दोनों की दोस्ती ठीक नहीं लगी वह करण को समझाते हैं कि तुम लीरा से अलग हो जाओ क्योंकि वह एक बार डांसर है जिसकी मां और पिता का कुछ अता पता नहीं है। ऐसी लड़की को समाज अच्छी नजर से नहीं देखता है।

समाज मुझे भी जीना मुश्किल कर देगा और ताना मारेगा कितना बड़ा बिजनेसमैन का बेटा एक बार डांसर के साथ घूमता फिरता है। परंतु पिता के समझाने के बावजूद करण पर कोई असर नहीं पड़ता है। वह पिता की बात को अनसुनी करते हुए लीरा की मां के बारे में खुद जारी रखता है एक दिन करण को मीरा के मां के बारे में पता चलता है वह खुश होकर आता है और लीरा को बताता है कि वह उसकी मां के बारे में सब कुछ पता कर लिया है। लीरा बहुत उत्सुक होकर पूछती है कि बताओ मेरी मां कहां है कैसी है वह मुझे छोड़कर क्यों चली गई इस तरह के बहुत सारे प्रश्न करण से करती है। करण बताता है कि उसकी एक नहीं तीन मां है और तीनों आपस में पक्की सहेली है, परंतु तीनों में असली मां कौन है यह पता नहीं चल सका है।

आज तीनों सहेली एक दूसरे से अलग रहकर ऊंचा मुकाम हासिल कर चुकी है। एक राजे सलमा जो घुड़सवारी के क्षेत्र में प्रसिद्ध है। दूसरी सलमा जो किसी कॉलेज में प्रिंसिपल है और अंत में जो तीसरी नीलम है, वह

केंद्र सरकार में स्वास्थ्य मंत्री है। तीनों अपने-अपने क्षेत्र में सख्त है और समाज सुधार का कार्य कर रही है। लीरा करण से कहती है कि मैं इन तीनों महान मां से कैसे मिलूंगी और कैसे पता करूंगी कि इन तीनों में से कोई एक मेरी असली मां है। करण लीरा को समझाता है कि इसके बारे में कोई ना कोई रास्ता निकाल लूंगा। एक दिन करण राजे सलमा और नीलम से मिलता है और अपने जन्मदिन के अवसर पर आने का निमंत्रण देता है। तीनों सहेलियों उसकी बात मान लेती है और जन्मदिन पर आने के लिए तैयार हो जाती है।

जन्मदिन की पार्टी पर लीरा अपना डांस दिखाती है पार्टी में हॉल खचाखच भरा है, तीनों महान हस्ती सहेली भी आगे से कतार में बैठी है, लीरा का डांस तीनों सहेलियों को पसंद नहीं आता है पार्टी में मौजूद सभी लोग अपने -अपने घर चले जाते हैं तीनों सहेलियां जब जाने लगती है तब लीरा एवं करण के दोस्त तीनों को रोकते हैं एक अलग कमरा में उसके तीनों मां के बीच बातचीत होती है, परंतु तीनों में से कोई भी स्वीकार नहीं करता की असली मां कौन है, बल्कि तीनों मां होने से इंकार कर देती है। लीरा के अनाथ एवं अकेली होने के साथ-साथ उसके परेशानियों से भी कोई फर्क तीनों को नहीं पड़ता है लीला अंत में हारकर तीनों को अपने-अपने घर चले जाने को कहती है तीनों अपना -अपना घर चली जाती है तीनों सहेलियों के बीच फोन पर बातचीत होती है। अफसोस भी करती है कि मां के रूप में स्वीकार कर लेते तो ठीक होता है।

परंतु तीनों सहेलियां समाज के डर से एवं अपना अपना घर टूटने के डर से मां होने से इंकार कर देती है। तीनों सहेलियों में राजे की शादी राज नामक घुड़सवार से है, तो सलमा का निकाह प्रिंसिपल के बेटा अख्तर से है, नीलम की शादी किसी कारणवश अमर नायक पायलट से नहीं हो पाती है क्योंकि वह अमेरिका अपने पिता के कहने पर चला जाता है नीलम राजनीति में आकर स्वास्थ्य मंत्री बन जाती है इधर करण के पिता मिस्टर मल्होत्रा अपने दोस्त कैलाश प्रसाद से नौकरी से कह कर लीरा को निकालने के साथ-साथ घर से भी कुछ गुंडों की मदद से निकाल देते हैं। लीरा अकेले ही अपना सामान लेकर रात के अंधेरे में निकल जाती है, तभी रास्ते में ही कुछ गुंडा लीरा को चेक लेता है एवं उसके साथ बदतमीजी करने लगती है। तभी राज की नजर लीरा पर पड़ जाती है और वह गुंडों से उसे बचा लेता है राज रीला को अपना घर जाने को कहता है, परंतु वह कहती है कि उसका अपना कोई घर नहीं है। उसके जन्म लेते ही उसकी मां अनाथ आश्रम में उसे पहुंचा कर कहां चली गई, उसे कुछ मालूम नहीं। कोई अनजान महिला उसकी देखभाल कर बड़ा की और वह भी इस दुनिया को छोड़ कर चली गई। इतनी बड़ी दुनिया में आज वह अकेली है। उसका कोई परिवार नहीं है जहां पर वह बार डांसर का काम करती थी वहां से भी आज निकाल दी गई है ।

अब वह सड़क के किनारे ही रहेगी। इतना कुछ सुनने के बाद राज को लीरा पर दया आ जाती है और वह उसे कहता है कि यदि उसे गलत ना समझे तो मुझे अकेला मानकर मेरे घर में तुम रह सकती है। लीरा राज के घर जाने के लिए राजी हो जाती है और राज के घर चली जाती है। राज के घर में उसकी नजर तीनों सहेलियों में से एक राजे पर पड़ती है। राजे लीरा को देख कर सका जाती है परंतु लीरा अकेले में ले जाकर राजे से कहती है कि आपके बारे में मैं राजन कल से कुछ नहीं बताऊंगी। आपमुझे से मत डरिए। राजे और लीरा खुश रहने लगती है। अब तीनों मां राजे सलमा और नीलम बारी-बारी से आकर लीरा से मिलती रहती है। परंतु तीनों से कोई भी जग जाहिर नहीं होने देती है कि उसकी असली मां कौन है ।

लीरा भी अब खुश रहने लगती है मेरा अपनी तीनों मां से बहुत पूछती है कि आप तीनों अपने जमाने में कॉलेज के समय में खुले विचार की थी आप तीनों में ही से ही किसी की युवावस्था की भूल हूँ मैं, परंतु आप लोग मुझे क्यों

नहीं बताती है कि मैं किसकी भूल हूं मीरा के बहुत मनाने पर भी तीनों में से किसी की हिम्मत सचस्वीकार करने की नहीं होती है। एक दिन राज के घर पर लीला का जन्मदिन की पार्टी का आयोजन किया जाता है जिसमें लीरा के तीनों मां के साथ साथ समाज के सभी गणमान्य लोग शामिल होते हैं, पार्टी जब खत्म होती है तो कैलाश प्रसाद राजे से पूछते हैं कि एक बार डांसर के लिए इतनी बड़ी पार्टी आपने दी है जो कभी गाना गाकर या डांस दिखा कर लोगों को खुश करती थी। दोनों के बीच खूब बहस होती है। कैलाश प्रसाद मिस्टर राजे को खूब अपमानित करते हैं तभी समाज के सामने आकर नीलम स्वीकार करती है कि लीरा अनाथ लड़की नहीं बल्कि वह उसकी वास्तविक मां है। मैं समाज के डर से अनाथ आश्रम में छोड़ कर चली गई थी ।

मैं तीनों सहेली से मां के रूप में एक वर्ष तक पालकर अनाथ आश्रम को सौंप दी थी। अनाथ आश्रम में छोड़ने के बाद भी इस के भरण-पोषण के लिए पैसा भेजती रही, परंतु लीरा जब 3 वर्ष की थी तभी वह गायब हो गई थी। इसे लेकर कौन गई थी, यह मालूम नहीं चला। हम तीनों बहुत खोजबीन की, परंतु कुछ भी पता नहीं चला। उसके बाद हम तीनों सहेली अपने-अपने क्षेत्र में आगे बढ़ते चले गए। इतना कुछ सुनने के बाद नीलम की बहुत किरकिरी हुई। नीलम समाज के सामने लीरा को अपनाते हुए अपने मंत्री पद से इस्तीफा देने तक की बात कह दी। समाज के सभी गणमान्य लोग अपने-अपने घर चले गए। नीलम के माथे पर कुमारी मां होने का ठप्पा लग गया, परंतु लीरा को पाकर बहुत खुश थी। नीलम लीरा को अपना घर ले जाती है, नीलम और निराशा साथ रहने लगते हैं तभी करण का फोन आता है। मेरा फोन रिसीव करती है और अपनी मां के बारे में सब कुछ बताती है। लीरा से मिलने उसका घर आता है। करण लीरा की मां से पूछता है कि वह शादी क्यों नहीं की तब नीलम अमर के बारे में सब कुछ बताती है ।

अमेरिका से वापस आकर अमर समाज के सामने लीरा की पुत्री के रूप में अपनाते हुए नीलम से शादी कर लेता है। करण अपने पिता मल्होत्रा से कहता है कि अब तो लीरा अनाथ लड़की नहीं रही। उससे मां और पापा दोनों मिल गए। साथ ही, वह बड़े-बड़े घर की बेटी हो गई है और वर्तमान में वह स्वास्थ्य मंत्री की बेटी है। अब तो मेरी शादी लीरा से होनी चाहिए। लीरा की मां-पापा एवं मौसी सभी मित्र मल्होत्रा को समझाते हैं एवं लीरा से शादी करने के लिए राजी कर लेते हैं लीरा एवं करण की शादी धूम-धाम से हो जाती है। समाज के सभी गणमान्य लोग शादी में शामिल होकर दोनों नवजोड़ी को सुखमय जीवन के लिए आशीर्वाद देते हैं।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

रविशंकर शुक्ल

पड़ोसन

विनय कुमार
पर्यवेक्षक

मेरी पड़ोसन राधा बला की खूबसूरत थी। उसे देखकर कोई भी आकर्षित हो सकता था, परंतु वह बाल विधवा थी मैं और मेरा दोस्त राज दोनों उसी मोहल्ले में रहते थे और आज एक पत्रकार था। राधा घर से बाहर बहुत कम ही निकलती थी। कभी-कभी खिड़की के पास आया करते थे। मैं जब भी राज से राधा के बारे में कुछ पूछना चाहता था तब वह बात काट कर निकल जाता था। उसका कहना था कि किसी भी स्त्री को जीवन में एक ही बार विवाह बंधन में बंधना चाहिएं राधा के सादगी देखकर धीरे-धीरे मैं भी उसके प्रति आकर्षित हो रहा था, परंतु मैं अपनी मन की बात किसी से कहना नहीं चाहता। मेरा आकर्षण का मतलब तन से प्रेम नहीं था, बल्कि मन ही मन में उसकी दिल से पूजा करता था। समय बित गया। एक दिन मैं राज से पूछा कि तुम कहीं शादी क्यों नहीं कर लेते हो, शादी के नाम पर आज बात को टाल कर चला जाता था।

कुछ समय बाद पता चला कि राधा के पिता बहुत पहले ही जब वह 12 वर्ष की थी तभी उसकी शादी मोहन नाम के लड़का से तय कर दिए थे। शादी के दिन जब बारात राधा के घर जाने के लिए निकली थी। रास्ते में ही गाड़ी के दुर्घटना हो जाने के कारण मोहन की मृत्यु घटनास्थल पर ही हो गई, परंतु पुरानी रीति-रिवाज से बंधे होने के कारण राधा को बाल-विवाह की रस्म पूरा करने के बाद रहना पड़ रहा था। राधा भी अपने को बाल विधवा मानकर सफेद वस्त्र धारण करती थी और किसी से बातचीत भी नहीं करती थी। घर से बाहर आना-जाना भी उसका बंद था। समय के साथ-साथ कब राज के मन में राधा के प्रति प्रेम के बीच किसी को पता नहीं चला है। मोहन सब से छिपकर राधा से पत्र के माध्यम से बातचीत करता था। राधा भी राज के प्रति धीरे-धीरे प्रेम रस में डूबने लगी। एक दिन जब मैं शादी का जिक्र किया तब वह बोला की शादी जल्दी होगी और तुम्हारे हाथ में शादी का कार्ड भी होगा।

परंतु शादी कहां होगी यह नहीं बताया। दो दिन के बाद मेरा मित्र राज शादी का कार्ड मुझे दे कर चला गया। जब मैं शादी का कार्ड खोल कर पढ़ा तो चकित हो गया। मैं राज के शादी में शामिल होकर वर वधू को आशीर्वाद देकर चला आया। अब तो मैं और राधा को देवी की तरह पूजा करने लगा। इस तरह मेरी पड़ोसन राधा सदा के लिए राजी हो गई।

वो अजनबी...

सोनल स्वराज
लेखाकार

दिसंबर की सर्द रात कोहरा भी काफी था। ऐसे में पायल को रात 8:30 बजे की ट्रेन पकड़नी थी। घर जाने को.....। यहाँ वह अपने माता-पिता से मिलने आई थी। पति विक्रम कार्यालय की व्यस्तता के कारण उसके साथ नहीं आ पाए थे । खैर इससे पहले भी वह अकेले सफर कर चुकी थी, परंतु उस रात कुछ ज्यादा ही कोहरा छाया था। स्टेशन पहुंची तो पता चला उसकी ट्रेन 5 घंटे लेट है। मां अकेले थी सो पिताजी को भी वापस भेज दिया मगर मन में डर था कि अब अकेले स्टेशन पर वह कैसे 5 घंटे बिताएगी। टिकट ए०सी० का था सो वेटिंग रूम में पहुंची मगर वहां सिर्फ दो पुरुष थे। वो भय के चलते गेट के पास वाली बेंच पर बैठ गई। कुछ देर में उन दो पुरुष यात्रियों में से एक उठ कर चला गया, शायद उसकी ट्रेन आ गई थी। अब उस कमरे में पायल और वह अजनबी पुरुष था। वो अजनबी चुपचाप अखबार को धीमी रोशनी में पढ़ने की कोशिश कर रहा था। अभी कुछ देर ही बिती थी कि बाहर से कुछ लोगों की आवाजें आने लगी, शायद उनकी भी ट्रेन लेट थी लेकिन जब वह लोग अंदर आए तो उनके साथ शराब की बदबू भी आनी शुरू हो गयी। पायल को कुछ सही महसूस नहीं हो रहा था क्योंकि उस कमरे में वह एक अकेली महिला थी और पुरुषों की संख्या चार थी, ऊपर से समाज में आए दिन होती रेप जैसी वारदातों से पहले ही मन घबराया हुआ था। अचानक कमरे में पतले वाले पुरुष यात्री ने अपना बैग उठाया और पायल के पास आकर दोनों के बीच में रखकर वहीं बैठ गया। पायल अभी भी खौफ मे थी तभी एक चाय वाले ने अंदर आते आवाज दी चाय गर्म, चाय गर्म.....। उस पुरुष यात्री ने दो चाय का इशारा किया, एक स्वयं लेकर दूसरी पायल को देने को कहा। चाय वाले ने वैसा ही किया। इससे पहले कि पायल चाय के पैसे देती उस अजनबी की ट्रेन आ गई थी। पहले तो वो उठा और फिर बोला-अरे क्या बात है चलिए ना, दीदी अपने ही ट्रेन की घोषणा हुई है। पायल ने एक टक उसे देखा फिर उन तीनों शराबियों को देखा, फिर अजनबी ने कहा देखिय मुझे नहीं पता यह ये आपकी ट्रेन है या नहीं बहन, मगर उन शराबियों के बीच आपको अकेले बैठे छोड़ने का मन नहीं था, इसलिए वैसे यह मेरी ट्रेन है अगर आपकी भी है तो अपने कोच की तरफ चले जाइए। पायल ने कहा जी यह मेरी ट्रेन नहीं है, कुछ वक्त लगेगा, आप जाइए उस अजनबी ने एक बारगी कुछ सोचा और कहा भाई आप घबराइए नहीं, मैं अगली ट्रेन पकड़ लूंगा। मगर ऐसी स्थिति में जैसे हर भाई को करना चाहिए मैं भी वही करूंगा और उसने वो ट्रेन छोड़ दी। कुछ समय बाद पायल की ट्रेन आई तो उस अजनबी ने पायल को उसके कोच में बैठने में मदद की और बाहर खड़े होकर ट्रेन चलने का इंतजार करने लगा जैसे-जैसे ट्रेन चलने लगी, वैसे-वैसे वह अजनबी पायल की नजरों से दूर हो रहा था। पायल ने दोनों हाथों को जोड़कर उस अजनबी को धन्यवाद दिया और उस अजनबी के लिए अपने भगवान से प्रार्थना करने लगी। शायद आज उसे

समाज में होती वारदातों से जो भरोसा जो विश्वास हो रहा था वापस से उसे वही भरोसा वही विश्वास महसूस हो रहा था।

सचमुच पांचों अंगुलियां बराबर नहीं होती।

आज भी समाज में ऐसे लोग मौजूद हैं जो अपने घरों की तरफ बाहर समाज में बहन-बेटियों की इज्जत करते हैं, उनका सम्मान करते हैं और जहां एक अभिभावक की तरह उनकी रक्षा को खड़े होना होता है, वहां वह मौजूद रहते हैं।

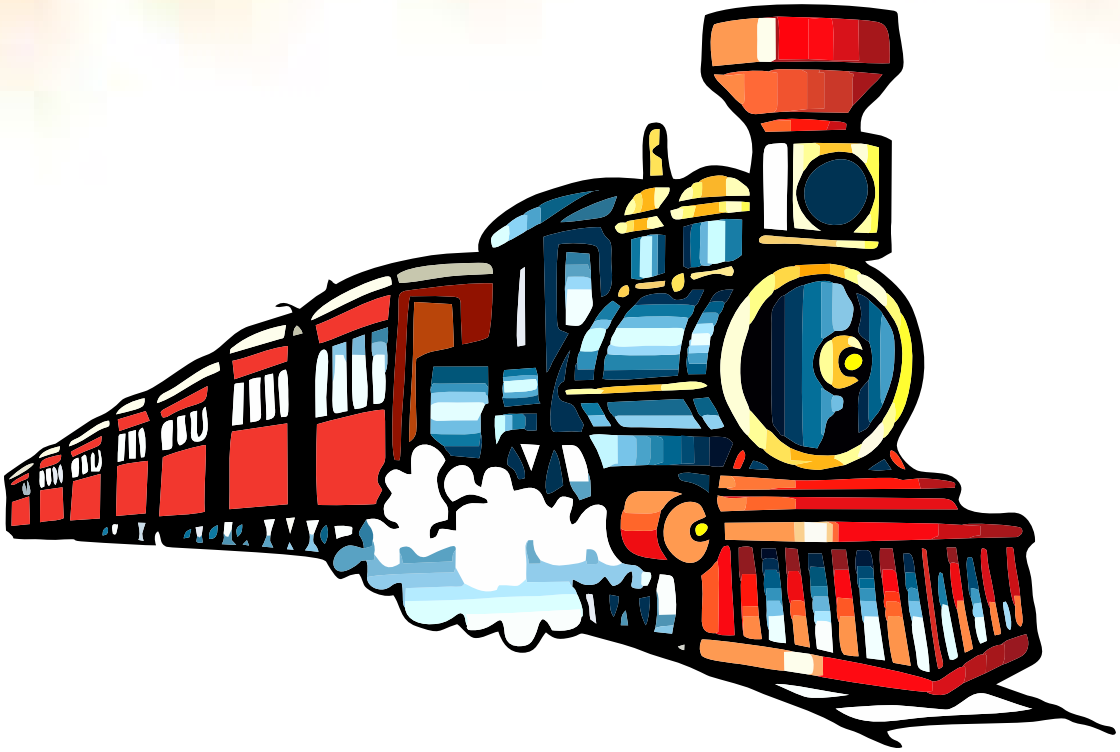

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

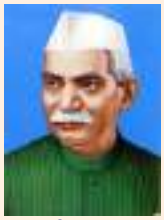

डॉ राजेन्द्र प्रसाद

नेमी कार्यालय टिप्पणियां / Routine Office Notes

1.	Seen, thanks.	देख लिया, धन्यवाद ।
2.	Seen and returned.	देखकर वापिस किया जाता है ।
3.	For information only.	केवल सूचना के लिए ।
4.	Submitted for information.	सूचना(जानकारी) के लिए प्रस्तुत है ।
5.	Papers have been amalgamated.	कागज पत्र मिला दिए गए हैं ।
6.	Reference notes on prepage.	पिछले पृष्ठ पर टिप्पणी के संदर्भ में ।
7.	Kindly acknowledge.	कृपया पावती भेजिए ।
8.	The receipt of the letter has been acknowledged.	पत्र मिलने की सूचना भेज दी है (पावती भेज दी गई है) ।
9.	The p.u.c. has not been acknowledged.	विचाराधीन पत्र की प्राप्ति सूचना नहीं भेजी गई है ।
10.	Needful has been done.	जरुरी कार्रवाई कर दी गई है ।
11.	Draft reply is put up for approval.	उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।
12.	Draft as directed by.....is submitted for approval.	..... के निदेशानुसार मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
13.	.....may please see for approval.	.....कृपया अनुमोदन के लिए देखें ।
14.	Please see preceding notes.	कृपया पिछली टिप्पणियाँ देख लें ।
15.	A chronological summary of the case is placed below.	इस मामले का तारीख वार सारांश नीचे रखा है ।
16.	Relevant orders are flagged.	संगत आदेशों पर पर्चीयां लगा दी गई है ।
17.	In this connection attention is invited to the noting at pp.....of file No.....	इस संबंध में फाईल सं. .....के पृष्ठ सं.....की टिप्पणी की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है ।
18.	Draft has been amended accordingly.	मसौदा तदनुसार संशोधित कर दिया गया है ।
19.	The proposal is self-explanatory.	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है ।
20.	No further action is called for.	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है ।
21.	This may please be treated as urgent.	कृपया इसे अविलम्बनीय समझें ।
22.	This may be passed on to .....for necessary action.	इसे आवश्यक कार्यवाही के लिए .....को भेजा जाए ।
23.	The papers are sent herewith.	कागज-पत्र इसके साथ भेजे जा रहे हैं ।
24.	The required papers are placed below.	अपेक्षित कागज-पत्र नीचे रखे हैं ।
25.	The file in question is placed below.	संबंधित मिसिल (फाईल) नीचे रखी है ।
26.	Requisite files are placed below.	अपेक्षित मिसिलें (फाईलें) नीचे रखी है ।
27.	Seen and returned with thanks.	देखकर सधन्यवाद वापस किया जाता है ।
28.	The matter is still under consideration of the	मामला अभी .....के विचाराधीन है ।
29.	No decision has so far been taken in the matter.	इस मामले पर अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है ।

30.	We agree with 'A' above.	हम ऊपर 'क' से सहमत है ।
31.	Application may be rejected.	आवेदन अस्वीकार कर दिया जाए ।
32.	.....may be informed accordingly.	.....को तदनुसार सूचित कर दिया जाए ।
33.	The proposal is self-explanatory. It may be accepted.	प्रस्ताव अपने –आप में स्पष्ट है । इसे मान लिया जाए ।
34.	Please speak.	कृपया बात करें ।
35.	Please discuss.	कृपया चर्चा करें ।
36.	Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कर्रवाई की जाए ।
37.	Please prepare a note of the case.	कृपया मामले के बारे में नोट तैयार कीजिए ।
38.	Please circulate and file.	कृपया सभी को दिखाकर फाईल कर दीजिए ।
39.	Issue reminder urgently.	तुरन्त अनुस्मारक भेजिए ।
40.	I agree.	मैं सहमत हूँ ।
41.	The proposal is quite in order.	यह प्रस्ताव पूर्णतः नियमानुकूल है ।
42.	For approval please.	अनुमोदनार्थ ।
4.3.	Action may be taken as proposed.	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए ।
44.	Timely compliance may be ensured.	समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए ।
45.	Draft reply is put up for approval.	उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।
46.	Draft letter has been amended accordingly.	पत्र का प्रारुप तदनुसार संशोधित कर दिया गया है ।
47.	Final draft submitted for signature as directed by you.	आपके निर्देशानुसार अन्तिम प्रारुप हस्ताक्षरार्थ प्रस्तुत ।
48.	Draft reply be prepared on the following suggestions.	निम्न सूझावों के अनुसार उत्तर का प्रारुप तैयार किया जाए।
49.	Issue as amended.	यथा संशोधित पत्र भेज दीजिए ।
50.	Draft is concurred in.	प्रारुप पर सहमति दी जा रही है ।
51.	Draft approved as amended.	मसौदा संशोधित रुप में अनुमोदित किया जाता है ।
52.	Report may be submitted at an early date.	रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत की जाए ।
53.	All concerned should note carefully.	सभी संबंधित व्यक्ति इसे ध्यान से नोट कर लें ।
54.	Please inform.....accordingly.	कृपया ..... को तदनुसार सूचित कर दीजिए ।
55.	Await further report.	आगे और विवरण की प्रतीक्षा किजिए ।
56.	Await reply.	उत्तर की प्रतीक्षा कीजिए ।
57.	Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए ।
58.	Issue today.	आज हीं भेज दिया जाए ।
59.	Draft may now be issued	प्रारुप को जारी कर दिया जाए ।
60.	The draft need not be issued.	प्रारुप को जारी करने की आवश्यकता नहीं है ।
61.	Submitted for perusal please.	अवलोकनार्थ सादर प्रस्तुत ।
62.	Submitted for orders please.	आदेशार्थ सादर प्रस्तुत ।

63.	Submit with P.U.C.(Papers under consideration)	विचाराधीन पत्रों सहित प्रस्तुत करें ।
64.	Submitted for consideration please.	विचारार्थ सादर प्रस्तुत ।
65.	Submitted for information please.	सूचनार्थ सादर प्रस्तुत ।
66.	Submitted for signature please.	हस्ताक्षरार्थ सादर प्रस्तुत ।
67.	Seen and returned.	देखकर वापस किया ।
68.	Seen and file.	देख लिया, नत्थी करें ।
69.	Seen and returning with thanks.	देखकर सधन्यवाद वापस ।
70.	Please see the preceding notes.	कृपया पिछली टिप्पणियां देख लें ।
71.	Draft reply is submitted for approval.	उत्तर का प्रारुप अनुमोदनार्थ सादर प्रस्तुत है ।
72.	Circulate for general information.	सर्वसाधारण की सूचनार्थ प्रसारित करें ।
73.	Circulate for compliance for information only.	पालनार्थ प्रसारित करें मात्र सूचनार्थ ।
74.	For circulation.	प्रसारणार्थ ।
75.	Further action is awaited.	अग्रिम कार्यवाही की प्रतीक्षा की जा रही है ।
76.	Action may be taken as proposed.	प्रस्ताव के अनुसार कार्रवाई की जाय ।
77.	Forwarded for necessary action.	आवश्यक कार्यवाही हेतु अग्रसारित ।
78.	Forwarded for consideration.	विचारार्थ अग्रसारित ।
79.	Please take the action as discussed.	चर्चानुसार कार्यवाही कीजिए ।
80.	Agreed as suggested.	यथानुरुप सहमत ।
81.	Please comment.	कृपया टीका कीजिए ।
82.	Please expedite.	कृपया शीघ्र भेजिए ।
83.	Draft reply be prepared on the following suggestions.	निम्न सुझावों के अनुसार उत्तर का प्रारुप तैयार करें ।
84.	Issue reminder urgently.	तुरन्त अनुस्मारक भेजें ।
85.	Expedite it .	इसे शीघ्रता से निपटाएँ ।
86.	Orders may be issued.	आदेश प्रसारित किए जाए ।
87.	Report may be put again.	प्रतिवेदन पुनः रखा जाए ।
88.	May be issued.	प्रसारित किया जाए ।
89.	May be rejected.	निरस्त किया जाए ।
90.	Agreed with marked 'A'.	'अ' पर अंकित से सहमत ।
91.	Necessary action has been taken.	आवश्यक कार्यवाही की गई है ।
92.	Amended draft is submitted for perusal please.	संशोधित प्रारुप अवलोकनार्थ सादर प्रस्तुत ।
93.	Relevant orders are flagged on 'A' .	संगत आदेश पताका 'अ' पर है ।
94.	Draft is concurred.	प्रारुप पर सहमति दी जा सकती है ।
95.	Please take the action as discussed.	चर्चानुसार कार्यवाही कीजिए ।
96.	Accepted as recommended.	यथासंस्तुत स्वीकार ।
97.	Facts of the case may be furnished.	मामले के तथ्य पेश करें ।
98.	Timely compliance may be ensured.	समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए ।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022 कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस एवं आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान
कार्मिकों के बच्चों द्वारा नृत्य -गान का प्रस्तुतिकरण

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान कार्यक्रम का आनंद लेते
प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण

हिन्दी पखवाड़ा 2021

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) भावोद्गार व्यक्त करते हुए

समापन समारोह एवं हिन्दी दिवस के अवसर पर
गृह मंत्री अमित शाह जी के संदेश का प्रसारण

सरकारी कामकाज (टिप्पण- प्रारूपण) मूलतः हिन्दी मे करने हेतु प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान करते प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय

हिन्दी पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते हुऐ प्रधान महालेखाकार महोदय ।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर
प्रधान महालेखाकार महोदय अपना विचार व्यक्त करते हुए ।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर
बच्चे नृत्य-गान प्रस्तुत करते हुए ।

हिन्दी पखवाड़ा 2021

हिन्दी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए
पूर्व वरिष्ठ उपमहालेखाकार महोदय, श्री मुकेश कुमार लाल ।

हिन्दी पखवाड़ा-2021 के उद्घाटन समारोह के अवसर पर
प्रधान महालेखाकार महोदय के दो शब्द ।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर
पद्मश्री डॉ० शांति रॉय अपना विचार व्यक्त करते हुए ।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर
महिलाएं गान प्रस्तुत करते हुए ।

हिन्दी पखवाड़ा 2021

हिन्दी पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन समारोह मे
प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण

कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका 'चेतना' के 32वे अंक का विमोचन
करते प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय एवं अन्य अधिकारीगण

''लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा''

"Dedicated to Truth and Public Interest"